 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

पौष-माघ, संवत् नानकशाही ५४०
जनवरी 2009 वर्ष २ अंक ५

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-57-58-59



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303**
संपादन विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

यदि आपको 'गुरमति ज्ञान' नहीं मिला या आप चंदे सम्बंधी कोई जानकारी लेना चाहते हैं या अपना पता बदलवाना चाहते हैं या पत्रिका सम्बंधी कोई और जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो मो: नं: 098148-98001 पर संपर्क करें।

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥
साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥
प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥
गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥
पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥
नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥१५॥ *(पन्ना ११०९)*

पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी बारह माहा राग तुखारी की इस पावन पउड़ी में माघ माह में तीर्थ-स्नान की प्राचीन युगों से चली आ रही परंपरा की पृष्ठभूमि में इस मासहमें मनुष्य-मात्र को रूहानी नैतिक गुणों रूपी मन-आत्मा के स्नान का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी का फरमान है कि माघ के माह में मेरी आत्मा तभी पवित्र होती है जब मुझे मन-अंतर के तीर्थ अथवा स्नान के बारे में सच्चा ज्ञान मिल सके। मैं यदि प्रभु-भक्ति रूप गुण को भली प्रकार से ग्रहण कर सकूं, यदि निर्मल भक्ति भावना मेरे अस्तित्व में समा जाए तो मुझे मेरा प्रियतम परमात्मा सहज स्वाभाविक ही मिल जाए।

गुरु जी मनुष्य-मात्र की ओर से आत्मा द्वारा प्रियतम परमात्मा को संबोधित करते हुए कथन करते हैं कि हे सुंदर प्रियतम प्रभु! मैं तेरे गुण अपने हृदय में बसा कर यदि तेरी सच्ची स्तुति करने लग जाऊं तो यह मेरा ऐसा तीर्थ-स्नान हुआ जो तुझको अच्छा लगता है। हे मालिक! यदि मैं आप में लीनता को प्राप्त कर लूं तो यह गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों की त्रिवेणी अथवा तीनों नदियों के मिलन-स्थान का ऐसा तीर्थ-स्नान हो सकता है जो आपको स्वीकृत है अथवा मेरे लिए त्रिवेणी का स्नान बाहरी नहीं बल्कि आत्मिक स्नान ही कल्याणकारी है। तेरी लीनता की आत्मिक स्थिति में सातों समुद्र समाये हुए हैं।

तीर्थ-स्नान के साथ-साथ माघ माह में तीर्थ-स्थानों पर जाकर किये जाने वाले अन्य कर्मों, जैसे पुन्य-दान, पूजा-उपासना आदि की पृष्ठभूमि सहित गुरु जी कथन करते हैं कि सभी युगों अथवा प्राप्त जीवन-काल में परमात्मा की सदीवी वास्तविकता अथवा उसके अस्तित्व का सच समझ लिया, उसके पुन्य-दान, पूजा-उपासना आदि समझो स्वत: हो गए अर्थात् उसको ये बाहरी कर्म करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। गुरु जी फरमाते हैं कि हरि-सुमिरन अथवा परमात्मा की सच्ची स्तुति रूप महा रस पीने वाले को अठारह तीर्थों का स्नान वैसे ही हो जाता है अर्थात् उसको इन बाहरी तीर्थों के स्नान की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, भाव केवल आत्मिक स्नान ही गुरमति में स्वीकृत है न कि बाहरी तीर्थ-स्नान।





मानव-सेवा का आदर्श उदाहरण : कीरतपुर साहिब का औषधालय

श्री गुरु हरिराय साहिब सिख धर्म के सातवें गुरु हुए हैं। आपका जीवन-काल संवत् १६८६-१७१८ अनुसार सन् १६३०-१६६१ का है, जिसमें आपका गुरुआई का संवत् १७०१-१७१८ अनुसार सन् १६४४ से १६६१ तक का है। आपका समस्त जीवन-काल ही शुभ कर्मों एवं परोपकारों के साथ भरा हुआ पूर्णत: स्वच्छ और निर्मल जीवनयापन को दर्शाता है। आप ने मानवतावाद और सर्वसांझीवालता के महान उद्देश्यों से प्रेरित, सत्यवादी आचरण पर केंद्रित सिख धर्म का, परम पावन गुरबाणी की व्याख्या द्वारा व्यापक प्रसार किया। आपके गुरबाणी प्यार व सत्कार को दर्शाती कई साखियां गुरु-इतिहास/सिख इतिहास का अभिन्न अंग हैं, जिनसे हम आपके गुरबाणी के प्रति प्यार व सत्कार का आवश्यक आदर्श रूप देख कर दिशा ले सकते हैं। आपका जीव-जंतुओं के साथ प्यार अद्वितीय रूप वाला है। आप एक सच्चे प्रकृति-प्रेमी हुए हैं। आपकी प्रकृति अत्यंत कोमलता तथा संवेदना के गुणों से सम्पन्न दृष्टव्य होती है। मानवी सहानुभूति, जरूरतमंदों की यथासंभव हर प्रकार की सहायता का भाव, रोगियों का उपचार और उनकी आदर्श सेवा-संभाल के गुण आप ने निर्मल सिख परंपरा से और गुरु-परिवार के एक आदर्श सदस्य होने के नाते पारिवारिक विरासत से लिए और इनको सर्वोच्च शिखर पर लेकर जाते हुए एक विस्मयजनक जीवन-इतिहास रचा। रोगियों के रोग निवारण हेतु आपने अपने गुरगद्दी-काल में विशेष प्रयास किये, जो सिख इतिहास का एक और गौरवशाली कांड सृजित करते हैं। भाई नंद लाल जी ने गुरु जी को *"सो करता हरि राइ दातारं"* शब्दों में वर्णन किया है। श्री गुरु अरजन देव जी महाराज ने तरनतारन साहिब में एक कुष्ट रोग निवरण केंद्र खोल कर अपने हाथों कुष्ट रोगियों के उपचार हेतु जो महान प्रयास किया उसी दिशा में चलते हुए सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब जी महाराज ने अपने गुरगद्दी-काल में बने सिखी प्रचार-केंद्र श्री कीरतपुर साहिब में सब प्रकार के रोगों की निवृत्ति हेतु बहुमूल्य एवं दुर्लभ औषधियों को विशेष प्रयासों सहित प्रकत्रित करके एक औषधालय स्थापित किया। यह उस युग में एक व्यापक सक्षम औषधालय था। यहां दूर-दूर से रोगी और उनके परिजन विभिन्न रोगों के उपचार हेतु औषधियां प्राप्त करते और उनकी बताई विधि के साथ सेवन करके कुशलता एवं निरोगता प्राप्त करते। औषधियां सभी जरूरतमंदों को बिना मजहब, जाति, रंग, नस्ल, वर्ग, श्रेणी आदि के सभी भेदभावों को दरकिनार करते हुए प्रदान की जाती थीं और यह निष्काम मानव-सेवा के महान गुरमति मिशन का एक अभिन्न अंग था।

सिख धर्म का जुल्म के साथ टकराव इसके उदय काल से ही चलता आया है। इस संदर्भ में सिख धर्म ने समय के अत्याचारी शासन-प्रशासन के विरुद्ध धर्म-युद्ध और निरंतर संघर्ष करने की नीति बनाई जो गुरु नानक पातशाह के समय से चलती आ रही है। श्री गुरु नानक देव जी महाराज सहित सभी सिख गुरु साहिबान ने समय के शासकों को सुधारने का ही मूल मनोभाव

रखा। भूले हुओं को सही मार्ग पर लाने की उनकी सदैव प्रयत्नशीलता रही।

सातवें पातशाह के गुरगद्दी काल में जब बादशाह शाहजहां तख्त पर आसीन था तो उसका सबसे बड़ा पुत्र दारा शिकोह एक बार बहुत बीमार पड़ गया। वास्तव में उसको सबसे छोटे भाई औरंगजेब ने शेर की मूंछ का बाल खिला दिया था जिससे दारा शिकोह धीरे-धीरे मृत्यु की तरफ बढ़ रहा था। शाहजहां दारा शिकोह को बचाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा था। वह दिन-रात चिंतित रहता था।

हकीमों द्वारा दारा शिकोह के रोग के उपचार हेतु एक विशेष वजन की हरड़ और विशेष वजन व आकार के लौंग तजवीज़ किये गए। इन दो अत्यंत दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त करने हेतु बहुत प्रयत्न किये गए, परंतु विफलता ही हाथ लगी। इसी स्थिति के दरमियान बादशाह शाहजहां को गुरु-घर (कीरतपुर) में स्थित औषधालय का पता चला। यह भी पता चला कि ये दोनों दुर्लभ औषधियां औषधालय में विद्यमान थीं। बादशाह शाहजहां दुबिधा में पड़ गया कि वह गुरु-घर से किस मुंह से आवश्यक औषधियां मांगे, क्योंकि उसने तो गुरु-घर से अनावश्यक टकराव की नीति अपना रखी थी और राजसत्ता के खुमार में उसने अनावश्यक टकराव व लड़ाई तक भी छेड़ रखी थी। साथ ही उसे यह आशा भी न थी कि उसको मांगने पर ये औषधियां मिल जाएंगी। ऐसा सोचना अस्वाभाविक भी न था, चूंकि राजनैतिक स्वार्थों के माहौल में तो दुश्मन को खत्म होते देख कर खुशियां मनाई जाती हैं। शाहजहां ऐसे माहौल में ही रहता आ रहा था। गुरु-घर के ऊंचे उसूलों का उसको ज्ञान न था कि यहां तो कोई बैरी और बेगाना है ही नहीं, सभी में उस प्रभु के नूर के दीदार किये जाते हैं। यहां तो बुरे का भी भला ही किया जाता है। शाहजहां के एक मंत्री ने जब उसको गुरु-घर के ऐसे उसूलों की जानकारी दी और चहेते पुत्र की आरोग्यता के उद्देश्य को सम्मुख रखते हुए शाहजहां ने लिखित रूप में इस मनोभाव का दोनों औषधियों के उल्लेख सहित पत्र लिखवाकर अपने संदेशवाहक को कीरतपुर साहिब को रवाना किया।

संदेशवाहक कीरतपुर साहिब आया और लिखित पत्र गुरु जी के सम्मुख रखा। 'श्री गुर प्रताप सूरज' के पृष्ठ ३५४९ पर यह प्रसंग विस्तृत रूप से अंकित मिलता है जिसके अनुसार सतिगुरों ने पत्र पढ़कर मुस्कराते हुए अपने मुखारबिंद से ये बचन किये कि बादशाह शाहजहां इस समय विवशता की स्थिति में है, उसने मन में अब श्रद्धा भी धारण की है। इससे भी ऊपर दारा शिकोह भला पुरुष, परमेश्वर का प्रियजन है और संतों का संगी-साथी है, अत: हरड़, लौंग वजन देख-जांच कर दे दिये जाएं। यही नहीं गुरु पातशाह जी ने विशेष कृपालु मनोस्थिति में एक जगमोती भी बख्शिश किया, जिसको पीस कर देने से उल्लेखाधीन दोनों औषधियों का गुण और अधिक बढ़ने की आशा थी। जब ये औषधियां दी गईं तो दारा शिरोह पूर्णत: निरोग हुआ। वह विशेष रूस से कीरतपुर साहिब आया और आरोग्यता बख्शिश करने के बदले उसने गुरु जी का धन्यवाद किया। सतिगुरों के दर्शन करके नदरी-नदर निहाल हुआ और उसने सतिगुरों के मुखारबिंद से निर्मल वचन श्रवण किये।

आज सिख पंथ सातवें पातशाह के द्वारा दर्शाये मार्ग पर चलता हुआ समूह मानवता के भले हेतु, सभी रोगियों के उपचार हेतु अपने दसवंध में से कई अस्पताल और औषधालय चला रहा है, और मज़हब, रंग, नस्ल, क्षेत्र, संप्रदाय के भिन्न-भेद के बिना निष्काम सेवा कर रहा है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दार्शनिक मान्यताएं

*-डॉ. अन्जुमन**

भारतीय इतिहास की अन्यतम शक्तिशाली ईश्वर-प्रदत्त, दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बहुमुखी प्रतिभा के रूप में नमस्य और उपास्य हैं। वे अपनी वीर-भावना, सुधार की उत्तेजना और सैनिक पराक्रम के साथ-साथ प्रखर आध्यात्मिक दृष्टि, अपार दार्शनिक प्रज्ञा और अनुपम काव्य-सूझ रखते थे। इनके महान व्यक्तित्व में अनेक विशेषताएं मिलती हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बहुआयामी और विलक्षण व्यक्तित्व के महत्व को रेखांकित करते हुए डॉ. धर्मपाल मैनी लिखते हैं, "भारतीय इतिहास में बड़े-बड़े युगपुरुष हुए हैं, परन्तु सम्पूर्ण इतिहास आलोड़ना-विलोड़ना करने पर भी मुझे गुरु गोबिंद सिंघ जी में एक अद्भुत ही व्यक्ति के दर्शन हुए हैं। मध्य युग इतिहास में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का स्थान अविस्मरणीय है। कुल मिलाकर एक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ही सर्वतोमुखी व्यक्तित्व ऐसा है जो राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से सबसे प्रखर है।[१] एक-एक विशेष क्षेत्र में तो अन्य महापुरुषों को भी स्मरण किया जा सकता है लेकिन सभी दृष्टियों से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व ही उभर कर प्रकट होता है। वस्तुत: श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने युग के सम्पूर्ण धर्म-गुरु, अप्रितम लोकनायक, महान समाज-निर्माता, अपूर्व योद्धा, पद-दलितों के मसीहा और सर्वश्रेष्ठ कवि थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु नानक देव जी के उदात्त दार्शनिक विचारों का अनुगमन करते हुए अपने दार्शनिक सिद्धांतों से भारतीय धार्मिक चिंतन को एक नया मोड़ दिया।

गुरु नानक साहिब की चिंतन-परम्परा और गुरु गोबिंद सिंघ जी :

श्री गुरु नानक देव जी मध्ययुगीन महान धर्म-संस्थापक के रूप में माने जाते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचारानुसार "श्री गुरु नानक देव जी ने अपने दार्शनिक सिद्धांतों के लिए . . .। सम्प्रदाय या आचार्य या किसी ग्रंथ विशेष के समर्थन के लिए उन्होंने रुकना उचित नहीं समझा। यह विशेष दृष्टि उनकी बहुत महत्त्वपूर्ण देन है। इसमें स्वाधीन चिंतन और आत्मानुभव हेतु उपलब्धि पर बल दिया गया है।"[२] वस्तुत: गुरु नानक साहिब ने अपने विचारों के लिए धार्मिक ग्रंथों के ज्ञान को आधार न बना कर स्वानुभूति को ही अपना संबल बनाया था। इस संदर्भ में वे कहते हैं :

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ *(पन्ना ७२२)*

श्री गुरु नानक देव जी ने ब्रह्म (प्रभु) को निर्गुण, निराकार, अनिर्वचनीय, सर्वशक्तिमान इत्यादि अनेक विशेषणों से निरूपायित किया है। गुरु नानक साहिब के अनुवर्ती गुरु साहिबान ने गुरु नानक साहिब के दार्शनिक सिद्धांतों का ही अनुगमन और अनुसरण किया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी अपने दार्शनिक सिद्धांतों के लिए गुरु नानक साहिब के

**C/o स. अवतार सिंघ नंबरदार, गांव धौलपुर, तहसील- बटाला, जिला गुरदासपुर। मो. ९२१७२७४४४३*

विचारों को ही प्राय: आधार बनाया। डॉ. प्रसिन्नी सहगल का मत है कि "गुरु नानक देव जी एवं गुरु गोबिंद सिंघ जी के ईश्वर सम्बंधी विचारों में किसी प्रकार का अंतर नहीं है।"[३]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दार्शनिक मान्यताएं :

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'दशम ग्रंथ' के रूप में बाणी-रचना की है। उनके द्वारा प्रणीत रचनाओं में प्रस्तुत दार्शनिक मान्यताओं का विवचेन इस प्रकार है :

ब्रह्म का स्वरूप : गुरु नानक साहिब की भांति श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ब्रह्म के स्वरूप को निरूपायित करने के लिए परंपरागत धर्म-ग्रंथों को एकमात्र आधार नहीं बनाया, भले ही उन्होंने विभिन्न धर्मों के दर्शनों का विशद और गंभीर अध्ययन किया था। उन्होंने कहा है कि मेरा ब्रह्म मात्र शास्त्रों की सीमाओं में आबद्ध नहीं है, यथा :

आदि अभेख अछेद सदा प्रभु बेद कतेब न भेदु न पायो।
दीन दयाल क्रिपाल क्रिपानिध सति सदैव सभै घट छायो ॥ *(तेती सवैये)*

ब्रह्म मात्र एक और ओंकार-स्वरूप है : श्री गुरु नानक देव जी का ब्रह्म एक है और ओंकार-स्वरूप है। वह ब्रह्म रूप में अमर, अयोनि और निर्मल है। उस निर्गुण ब्रह्म के आदेशानुसार ब्रह्म, विष्णु और महेश चालित हैं और उसी की सेवा में लीन रहते हैं। वह अविनाशी और सर्वत्र प्रकाशित है। गुरु साहिब ने उसी एक को अपना गुरु कहा है :

आदि अंति एकै अवतारा ॥
सोई गुरू समझियहु हमारा ॥९॥ (अकाल उसतत)

ब्रह्म का अकाल स्वरूप : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ब्रह्म के लिए 'अकाल' शब्द का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं 'काल' और 'अकाल' दोनों शब्दों का प्रयोग किया, यथा :

काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥
(जापु साहिब)

ब्रह्म का रौद्र तथा उग्र रूप : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ब्रह्म का उग्र रूप भी प्रस्तुत किया है। ब्रह्म का रौद्र रूप उन्हें विशेष प्रिय है। उनका यह दृढ़ विश्वास है कि अन्याय और अत्याचार को न सहकर उसके विरुद्ध शस्त्र उठाना उचित है। गुरु साहिब ने शस्त्रों का उपयोग इसी कारण किया है। सभी जगह उन्होंने कृपाण को ही श्रेष्ठ कहा है।

गुरु साहिब धर्म के युद्ध में जूझ मरने का वरदान परमात्मा से मांगते हैं, परन्तु वे पहले दुश्मनों की हार चाहते हैं। उनके शब्दों में :

देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो, निसचै करि अपुनी जीत करों ॥ *(चंडी चरित्र)*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी बाणी में प्रभु के 'दुष्ट-दमन' रूप का भी वर्णन किया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा अवतारवाद और बहुदेववाद का विरोध :

"श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु नानक साहिब तथा उनके अनुवर्ती गुरु साहिबान के समान अवतारवाद और बहुदेववाद का विरोध किया है। उन्होंने श्री रामचन्द्र और श्री कृष्ण आदि को ब्रह्म के अवतार रूप में नहीं बल्कि "अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध" लड़ने वाले महापुरुषों के रूप में समादृत किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी विष्णु-अवतार की कथा अति तन्मयता से कहने के पश्चात् विष्णु को अपना पूज्य मानने से इंकार कर देते हैं।"[४]

पाइं गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आंख तरे नही आन्यो ॥
राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥ *(सवैये)*

गुरु नानक साहिब की भांति श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अवतारवाद और बहुदेववाद में कोई आस्था नहीं रखते।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने प्रभु को निराकार, निरंजन रूप में अंकित किया है। वह अकाल रूप अवतारों में नहीं आता है। इन्होंने श्री राम, श्री कृष्ण तथा चण्डी आदि महान् शक्तियों को अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध लड़ने वाली विभूतियां माना है।

सृष्टि की अवधाराणा :

प्रभु ही सृष्टि की रचना करता और समाप्त करता है। परमात्मा भी सृष्टि की रचना करके स्वयं उसे अपने में लीन करके, पुन: एक हो जाता है, यथा :

काल सभन का करत पसारा ॥
अंत कालि सोई खापनिहारा ॥
आपन रूप अनंतन धर ही ॥
आपहि मद्धि लीन पुनि करही ॥३॥
(चउबीस अउतार)

जीव की अवधारणा :

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जीवात्मा और परमात्मा में भेदभाव को स्वीकार नहीं करते। विश्व के सम्पूर्ण जीव ब्रह्म से ही उत्पन्न हुए हैं और अंत में उसी में विलीन हो जायेंगे:

जितिक जगति के जीव बखानो ॥
एक जोति सभ ही महि जानो ॥
काल रूप भगवान भनैबो ॥
ता महि लीन जगति सब हैबो ॥ (चउबीस अउतार)

माया का स्वरूप :

गुरदेव माया को परमात्मा से मिलन में बाधा डालने वाली मानते हैं। माया में ही वशीभूत होकर मनुष्य की बुद्धि जड़ हो जाती है। यदि इसे दूर कर दिया जाये तो भेद-बुद्धि समाप्त हो जाती है और साधक अपने इष्ट से एकाकार हो जाता है।

पुनर्जन्म की अवधारणा :

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जीवात्मा के पुनर्जन्म पर अपना विश्वास प्रकट किया है। उन्होंने जीव-मात्र का मूल स्रोत परमात्मा को ही माना है। सारी योनियां उसी के हुक्म से उत्पन्न होती हैं।

निष्कर्षत: श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वीकारा है कि ब्रह्म ही सृष्टि की रचना करता है और समाप्त करता है, उन्होंने जीव और ब्रह्म की तात्विक एकता को स्वीकारा है। माया के आवरण को दूर कर देने से साधक का एकाकार अपने आराध्य से हो जाता है।

समग्रत: कहा जा सकता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु नानक साहिब के विचारों को ही आधार बनाया है और इसके साथ-साथ अपने आराध्य की भावना में नई उद्भावनाएं भी प्रस्तुत की हैं। उन्होंने ब्रह्म के रौद्र रूप को रूपायित कर अपनी मौलिकता भी प्रदर्शित की है।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची :

१. डॉ. धर्मपाल मैनी : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काव्य में भारतीय संस्कृति के तत्व (इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९७२), पृ. ८
२. आचार्य हजारी प्रसाद : सिख गुरुओं का पुण्य स्मरण, (दिल्ली : राज कमल प्रकाशन, १९६९), पृ. ३६
३. डॉ. प्रसिन्नी सहगल : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और उनका काव्य (लखनऊ : हिन्दी साहित्य भंडार, १९६५), पृ. २८८
४. डॉ. हरिभजन सिंघ : गुरमुखी लिपि में हिन्दी काव्य (दिल्ली : भारती साहित्य मंदिर, १९६३), पृ. ३४ 

जो दे गये वंश तक की बलि वे दाते थे गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-स. रमेश सिंघ**

दुनिया में कई प्रकार के दानी हैं और बड़े-बड़े दानी हुए हैं। कोई धन का दानी है, कोई अन्न का तो कोई भूमि का, कोई सोना चढ़ाता है कोई वस्त्र, कोई बर्तन तो कोई वाहन, दान कर देता है। आम तौर पर हर दान के पीछे कुछ पाने की लालसा होती है, चाहत छिपी रहती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जो दान दिया वह अद्‌भुत है, बेमिसाल है, बाकमाल है, अतुलनीय है, क्योंकि गुरु जी ने अपना सरवंश दान कर दिया और यह दान पूरी तरह से निष्काम था, मानव-कल्याण के लिए था, भारतवासियों को गुलामी से मुक्त कराने के लिए था, धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए था, सोये हुए जनमानस को जगाने और उसमें आत्म-बल भरने के लिए था।

आईये, जरा पृष्ठभूमि पर विचार कर लें। देश में हाहाकार मचा हुआ था। राजतंत्र द्वारा लोगों को बलपूर्वक धर्मांतरण के लिए मजबूर किया जा रहा था। राजा अपना धर्म पूरी तरह भूल चुका था। इस अन्याय और जुल्म से बचने के लिए ३०० कश्मीरी पंडितों का एक शिष्टमंडल पंडित किरपा राम की अगुआई में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पिता नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी की शरण में अनंदपुर साहिब (पंजाब) अपनी फरियाद लेकर पहुंचा तथा विनती की, "गुरु जी! हमारा धर्म खतरे में है, इस मुसीबत की घड़ी में हमारी बांह पकड़ने वाला कोई नहीं है, हम बड़ी उम्मीद लेकर गुरु नानक साहिब के दरबार में आये हैं। आप हमारी रक्षा करें।" गुरु जी ने इस फरियाद को ध्यान से सुना और इन विचारों में खो गये कि शरणागत आये ब्राह्मणों की रक्षा किस प्रकार की जाये। इसी समय बाल गोबिंद राय जी वहां पहुंचे और शिष्टमंडल के आने का कारण पूछा और बताये जाने पर फिर पूछ लिया कि समस्या का क्या हल हो सकता है? श्री गुरु तेग बहादर जी ने कहा, "बेटा! किसी महापुरुष को अपना बलिदान देना होगा।" नौ वर्षीय श्री गुरु गोबिंद राय जी ने तपाक से कहा, "पिता जी! आपसे बड़ा महापुरुष और कौन है?" आप ही अपना बलिदान देकर इन आगंतुकों की आस्था की रक्षा कीजिये। श्री गुरु तेग बहादर जी ने पूछ लिया, "बेटा! तुम जानते हो तुम क्या कह रहे हो? तुम अनाथ हो जाओगे।" बाल गोबिंद राय ने उत्तर दिया, "पिता जी यदि मेरे एक के अनाथ होने से इस देश के हजारों बच्चे अनाथ होने से बच जायें तो यह सौदा सस्ता है। गुरु जी ने फैसला कर लिया और औरंगजेब द्वारा बुलाये जाने या गिरफ्तारी का वारंट जारी होने का इंतजार नहीं किया, वरन् खुद दिल्ली जाकर चांदनी चौक में शहीद हो गये।

इस प्रकार मानव-मात्र के धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए जो संघर्ष हुआ उसी चक्र में कालांतर में गुरु जी ने चमकौर के युद्ध में अपने दो बड़े सपुत्रों—बाबा अजीत सिंघ और बाबा जुझार सिंघ को अपनी

*C-131, Sonari West, Jamshedpur-831011

आंखों के सामने शहीद करवा दिया तथा उनके दो छोटे सुपत्रों—बाबा जोरावर सिंघ व बाबा फतह सिंघ को सरहिंद की दीवारों में जिंदा चिनकर शहीद कर दिया गया। उनकी माता, माता गुजरी जी ने भी वहीं सरहिंद में अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। अपना सब कुछ न्योछावर करने के बाद गुरु जी ने कहा, "प्रभु! आपका धन्यवाद है, मैंने आपकी अमानत आपको वापस कर दी है।" पुत्रों को खोने के बाद सुपत्नी के सन्मुख इस प्रकार प्रसन्नता व्यक्त की, "चार मूए तो क्या हुआ, जीवत कई हजार"! दान देकर प्रसन्नता पाना आखिर स्वाभाविक है। इसके इलावा गुरु जी ने अपनी जमीन-जायदाद, धन-दौलत, सोना-चांदी जो कुछ भी अपना था, सब कुछ न्योछावर कर दिया देश-हित में।

मानव-मात्र को गुरु जी ने गुणों का जो दान दिया उसकी कीमत कौन आंक सकता है? गुणों की बात तो सभी करते हैं पर गुणों का दानी वही कहलाता है जो उन पर चलकर उन्हें अपने जीवन में प्रकट कर देता है और दूसरों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन जाता है।

विनम्रता का दान

गुरु जी सदैव खुद को प्रभु का दास मानते थे और कहते थे :

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥
मो कौ दास तवन का जानो ॥
या मै भेद न रंच पछानो ॥ (बचित्र नाटक)

अपनी बाणी में प्रभु के प्रति कृतज्ञता और आभार प्रकट करते हुए गुरु जी कहते हैं कि मैं तो तृण समान हूं। तुमने मुझे पहाड़ जैसा महान् बना दिया है। यह तुम्हारी महानता है, तुम्हारी गरीब-निवाजी का सबूत है। प्रभु! मेरा तो स्वभाव ही है गुनाह करना, इस दुनिया में मुझ जैसा गुनहगार और दूसरा कोई नहीं पर आप अपने स्वभाव के अनुसार मेरी भूलों को क्षमा करते रहना :

मेरु करो त्रिण ते मुहि जाहि गरीब निवाज न दूसर तो सो ॥
भूल छिमो हमरी प्रभ आपन भूलनहार कहूं कोऊ मो सो ॥९२॥१॥ (बचित्र नाटक)

प्रभु-प्रेम का दान

गुरु जी ने प्रभु-प्रेम की एक झलक देखिये, "ऐ मेरे मित्र प्रभु! अपने शिष्य के मन की भावना सुनो। आपके बिना मुझे रजाई (अर्थात् दुनिया के सुख-साधन) रोगी बना देती है तथा ऐसी पीड़ा पैदा होती है मानो मुझे नाग-सांपों के साथ रख दिया गया है। दुनिया के भोग-विलास, खंजर और फांसी का फंदा प्रतीत होते हैं तथा आपसे अलग होना इतना कष्टदायक है जैसे गर्दन पर कसाई की छुरी चल रही हो। दूसरी ओर जब आपका संग और सानिध्य प्राप्त रहता है तो जमीन रूपी चटाई पर सोना भी बड़ा आनंददायी बन जाता है, पर आपके बगैर, महलों का सुख भट्ठी में तपने के समान कष्टदायी है।" यह गुरु जी के प्रभु-प्रेम का ही परिचायक है कि लड़ाई के मैदान में भी गुरु जी ने अमृत-वेला में प्रभु का कीर्तन नहीं छोड़ा।

समदृष्टि का दान

युद्ध करना गुरु जी का शौक न था। औरंगजेब को लिखे अपने पत्र में उन्होंने कहा, जब जुल्म को रोकने के समस्त शांतिपूर्ण उपाय विफल हो गये तो मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए मुझे तलवार उठानी पड़ी, वरन् मूलतः मैं तो सदा प्रभु की भक्ति में तल्लीन रहना चाहता हूं। युद्ध के समय भी उनके मन में विरोधियों के प्रति कोई वैर-विरोध की भावना न थी।

लड़ाई के मैदान में भी उनके अनन्य शिष्य भाई घनईया, सिख और मुसलमान घायलों की समान रूप से सेवा करते थे। गुरु जी जो भी तीर चलाते थे उसमें सोना लगा रहता था ताकि उनके तीरों से घायल होने वाला खुद का इलाज करा सके और मृत सिपाही की अंत्येष्टि का प्रबंध किया जा सके।

धार्मिक सद्भावना का दान

गुरु जी ने कहा, *"देहुरा मसीत सोई पूजा ओ निवाज ओई"*, अर्थात् सभी धर्म-स्थल (मंदिर हो या मस्जिद) समान रूप से सम्मानीय हैं तथा प्रभु को रिझाने के सभी तरीके समान रूप से मान्य हैं (पूजा हो या नमाज, क्या अंतर है?), क्योंकि सारे उस 'एक' से जुड़ना सिखाते हैं। प्रभु को किसी भी नाम से याद किया जाये, किसी भी भाषा में याद किया जाये, प्रवान है। इन बातों पर कोई भी विवाद या फसाद उचित नहीं, क्योंकि मनुष्य-मात्र की एक ही जाति है 'मानवता' और सबका एक ही धर्म है 'प्रेम' तथा अपने उपदेशों द्वारा इस सिद्धांत को दृढ़ कराया:

—मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
(अकाल उसतत)

— . . . जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभु पाइओ ॥
(त्वप्रसादि सवैये)

उन्होंने खुद इन उपदेशों पर अमल किया, जिसके फलस्वरूप कई मुस्लिम उनके मुरीद बन गये, जिनमें नबी खान, गनी खान, पीर बुद्धूशाह प्रमुख हैं। गुरु जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एक मुस्लिम कवि अल्ला यार खां योगी ने तो यहां तक कह दिया :

इंसाफ करे जमाना तो मुझको यकीं है।
कह दे कि गोबिंद का सानी ही नहीं है।

आत्म-सम्मान का दान

गुरु जी ने अपनी उपलब्धियों का समस्त श्रेय अपने शिष्यों को देते हुए कहा, *"इनही की किरपा के सजे हम हैं नहीं मो सो गरीब करोर परे"* (अर्थात् मेरा मान-सम्मान तो इन्हीं की कृपा से है वरन् मेरे जैसे करोड़ों लोग मौजूद हैं, उन्हें कौन पूछता है! गुरु जी ने जब खालसा पंथ का सृजन किया तो अमृत पिला कर पांच प्यारों को सजाया, सबके नाम के अंत में 'सिंघ' शब्द जोड़ कर उन्हें 'सरदार' बनाया। गुरु साहिब का कमाल देखिये कि खालसा के सृजनहार होने के बावजूद पांच प्यारों के सन्मुख उन्होंने हाथ जोड़ कर विनती की कि वे अब उन्हें (गुरु जी को) भी अमृत पिला कर खालसा जमात में शामिल कर लें और गोबिंद राय से गोबिंद सिंघ बना दें। साथ ही उन्होंने कहा, आप लोगों ने अपना शीश भेंट कर अमृत का दान लिया है, अब आप मुझ से भी मांग करो कि इस अमृत प्राप्ति के लिए मैं क्या अर्पण करूंगा! जब भाई दया सिंघ जी ने गुरु जी की कृपां-दृष्टि से प्राप्त आत्म-सम्मान व आत्म-बल से पूछ लिया कि बतायें कि आप अमृत-प्राप्ति के लिए क्या देंगे तो गुरु जी का उत्तर कुछ इस प्रकार था—"दया सिंघ जी, मैं अमृत का कोई मूल्य तो नहीं दे सकता, पर यह कहना चाहता हूं कि मेरे पास जो कुछ भी है वह सब कुछ भेंट कर दूंगा। पिता तो पहले ही शहीद करा चुका हूं, समय आने पर बेटों की बलि चढ़ा दूंगा, अपना सर्वस्व कुर्बान कर दूंगा। न मेरे सिर पर ताज होगा, न हाथ में बाज होगा, न मेरे पास घोड़ा होगा, अपना सब कुछ अर्पण कर दूंगा।" गुरु जी द्वारा अपने शिष्य के सामने नत्मस्तक होकर उनसे अमृत का दान मांगने के अद्भुत आचरण ने उन्हें *"आपे गुर चेला"* की उपाधि प्रदान की। भाई गुरदास जी (द्वितीय) ने इसे बाखूबी बयान किया है : *(शेष पृष्ठ १७ पर)*

अद्वितीय व्यक्तित्व : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई. में जिस "खालसा पंथ" अथवा "अकाल पुरख की फौज" की स्थापना की थी उसकी परंपरा अथवा मूल तो श्री गुरु नानक देव जी (१४६९-१५३९ ई.) से ही प्रारंभ हो गया था। श्री गुरु नानक देव जी ने सिख पंथ की नींव, शहीदी आधारशिला पर ही रखी थी :

जउ तउ प्रेम खेलन का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अकाल पुरख जी की कृपा से खालसा पंथ की स्थापना की। पांच ककारों के धारक शूरवीर गुरु जी ने हाथ में खड़ग लेकर दुष्टों का विनाश किया। "वाहिगुरु जी की फतहि" बुला कर, सारे भारी युद्ध जीत लिए। बेसहारों एवं श्रमिकों की डट कर सहायता की। अकाल पुरख का नाम चारों कूटों में प्रचारा और प्रसारा। गुरु-कृपा से अधर्म की काली अंधकारमयी रात्रि का सर्वनाश होकर सत्य-धर्म का बोलबाला हुआ। शूरवीर गुरु जी के खंडे, तीर और कृपाण के किए हुए वारों को कोई भी सहन न कर सका। दुनिया भर के इतिहास में ऐसा कोई प्रतापी संत-महाबली, महापुरुष पैदा नहीं हुआ, जिसने अपने पैरोकारों को अपने जैसा (अपना ही रूप) बना कर, फिर उन्हीं से खुद "अमृत की दात" मांगी हो। इसी लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को "आपे गुर चेला" जैसे विशेषणों से सतकारा जाता है।

श्री गुरु नानक देव जी और दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में रत्ती भर भी भिन्न-भेद नहीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नौवें सतिगुरु श्री गुरु तेग बहादर जी के घर प्रकट हुए। गुरु जी के मुंह से निकले अगंमी बोल/शब्द, रत्न, जवाहर, मानक हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने प्रकट होकर अकाल पुरख का झंडा चारों दिशाओं में बुलंद किया। आप जी ने परंपरागत साधुओं वाला कोई भी वेष धारण नहीं किया, पत्थरों की पूजा नहीं की और न ही सिर उपर जटाएं ही रखीं, न ही कानों में मुंदरें डालीं, केवल मात्र अकाल पुरख की ही आराधना की। आप जी ने अगर खालसा पंथ की स्थापना की तो भी अकाल पुरख की आज्ञा से ही की। प्रभु-कृपा से गुरु जी की हर मैदान में जीत हुई और इस फतह (जीत) का गर्व भी उन्होंने अपने सिर पर नहीं लिया। *"वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह"*, कह कर पूरा यश वाहिगुरु को ही दिया, जिसकी कृपा, बल और सामर्थ्य से सभी कार्य सफल हुए हैं।

गुरु दशमेश पिता जी दो जहान (लोक और परलोक) के मालिक हैं। जहां से सूर्य उदय होता है और जहां पर अस्त होता है अर्थात् पूरे विश्व पर गुरु साहिब का हुक्म चलता है। दुनिया के सभी प्रकार के पदार्थ, रिद्धियां और सभी ताकतें शाहे-शहंशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर-१४३५२१ (पंजाब)*

जी की मुट्ठी में हैं। आप जिस पर प्रसन्न होते हैं और जिस पर कृपा की दृष्टि करते हैं, उसके हलत-पलत संवार देते हैं। उसको न तो किसी प्रकार की चिंता रहती है और न ही कोई ख्वाहिश। जिसकी ओर बादशाह दरवेश गुरु जी होते हैं, उसको कभी भी हार नहीं आ सकती। लाख-करोड़ी बाजू, लाव-लश्कर, उसका रोम भी टेढ़ा नहीं कर सकते। श्री गुरु गोबिंद जी नाम के बोहिथ हैं। वे निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में ही विद्यमान हैं। उनकी नकल न तो कोई कर सका है और न ही कोई अन्य कर सकता है। जो भी गुरु जी पर कितनी भी बड़ी सेना क्यों न लेकर आया वो सदा परास्त होकर ही गया, जो शरण पड़ा उसकी सदा ही लाज रही।

धर्म और सारी सृष्टि उसके हुक्म में है। उसके तेज प्रताप के सामने कोई भी नहीं टिक सकता। उससे सदा ही जीवन प्रदान करने वाली रहमत और कृपा भरी दृष्टि की ही मांग करनी चाहिए :

दीनो दुनीआं दर कमंदि आं परी रुख़सारि मा
हर दो आलम कीमति यक्क तारि मुइ यारि मा।
मा नमी आरेम ताबि ग़मज़ाए मिज़गानि ऊ
यक्क निगाहि जां फिज़ाइश बस बवद दरकारि मा। *(भाई नंद लाल जी)*

सभी की सहायता करने वाले और जिनकी सहायता परमात्मा से हुई, वही महान पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज हैं। वे अकाल पुरख के हृदय में समाए हुए हैं। वे प्रभु के बेअंत भंडारों के मालिक और विशेष निकटवर्ती हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी करता पुरख, रचनहार के पूर्ण ज्ञाता हैं। वे बादशाहों के बादशाह भी हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दर्शन-उपदेश अर्थात् आप जी की बाणी-रचना का विषय उसी गुरमति दर्शन का अटूट अंग है जो श्री गुरु नानक देव जी से प्रारंभ हुआ था। इसलिए आप जी की बाणी-रचना का विषय-पक्ष, गुरबाणी के अनुकूल स्वाभाविक ही है। आप जी का पवित्र कथन है : प्रभु-नाम का सुमिरन करने वाले व्यक्ति का शरीर सदा ही सोने के समान चमकता है, उसका हृदय सदा खिला हुआ रहता है, वे जन्मता-मरता नहीं अर्थात् उस पर मृत्यु का असर नहीं होता।

आतम उपदेस भेस संजम को जापु सु अजपा जापे ॥
सदा रहै कंचन सी काया काल न कबहूं बयापे ॥ *(दशम ग्रंथ)*

अकाल पुरख का नाम ही सर्व-सुखदायक है। सभी प्रकार के पाप और कष्ट, प्रभु-नाम-सुमिरन से नाश हो जाते हैं। सतसंगत उत्तम है। सतसंगत से हरि-रस प्राप्त होता है। यहां से ही प्रभु-मिलाप के लिए चाव उत्पन्न होता है। जो व्यक्ति सभी प्रकार के सुख लेने चाहते हैं उन्हें केवल हरि-रस (नाम-अमृत) ही पीना चाहिए :

संग्रहि करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो ॥
जा ते दूख पाप नहि भेटै काल-जाल ते तागो ॥
जौ सुख चाहो सदा सतौन कौ ततौ हरि के रसि पागो ॥ *(दशम ग्रंथ)*

गुरसिखी के मार्ग पर पांव रखने हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खंडे-बाटे के अमृत को जरूरी कह कर, इसको 'प्रथम रहत' कह कर सत्कारा है। गुरु का सिख पांच प्यारों से खंडे की पहुल प्राप्त करके, जो उपदेश उनसे मिले, उसको अपने हृदय में परिपक्व करके रखे!



बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ

*-स. प्यारा सिंघ**

किसी समय मुगल सम्राट औरंगजेब के बड़े पुत्र शहजादा मुअज़्ज़म गवर्नर अफ़गानिस्तान के रहे मुंशी गुरु-घर के प्रेमी भाई नंद लाल जी ने अपनी फारसी रचना "तौसीफे-सना' में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति अत्यन्त श्रद्धा व्यक्त की है तथा अपनी अकीदत के बहुमूल्य श्रद्धा-सुमन अर्पित किये हैं :

हक्क हक्क अंदेश गुर गोबिंद सिंघ।
बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ।

अर्थात् बेशक वे किसी देश-प्रदेश के बादशाह नहीं थे, परन्तु वे लाखों दिलों पर राज करते थे। क्या है कोई ऐसा बादशाह जो नंगी तलवार हाथ में लिये मंच पर खड़ा अपने शिष्यों के सिरों की मांग कर रहा हो और पांच शिष्य स्वेच्छा से बारी-बारी अपने शीश भेंट कर दें? रक्त से सनी नंगी तलवार का यह नज़ारा देखने के बावजूद एक ही दिन में अस्सी हजार श्रद्धालु उनके मुरीद बन कर 'खालसा' सज गये। लोगों ने उन शीश भेंट करने वाले पांच सिखों को 'पांच प्यारे' कहा। यह रोचक नजारा औरंगजेब को खुफिया रिपोर्ट भेजने वाले एक जासूस, जो कि ब्राह्मण के वेष में अनंदपुर साहिब में रह रहा था, ने भी देखा, जिसका नाम अबूउल्ला तुरानी था। वह इस आंखों देखी घटना से इतना प्रभावित हुआ कि वह अपनी यह आखिरी रिपोर्ट भेज कर गुरु का सिख हो गया। हजारों लोगों को यह आबेहयात (अमृत) प्रदान करने वाला यह बादशाह (दशम पातशाह) अपने पांचों प्यारों के सामने झुका और उनसे अमृत प्रदान करने की प्रार्थना की। क्या है कोई ऐसा प्रमाण कि कोई बादशाह जो अपने ही सजाये गये शिष्यों के सामने नत्-मस्तक होकर खालसा बनाने की प्रार्थना करे? क्या ऐसा भी कोई बादशाह होगा जो कहे, *"मैं हों परम पुरख को दासा, देखन आइओ जगत तमासा।"* वे किसी काल्पनिक कथा के बादशाह न थे, वे जरोजन के पीछे भागने वाले बादशाह न थे। वे तो एक ऐसे बादशाह दरवेश थे जिन्होंने अपने मातलोक में जन्म लेने का उद्देश्य अपनी आत्म-कथा 'बचित्र नाटक' में निम्न प्रकार से प्रकट किया है :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट देखीअनि पकरि पछारो ॥४२॥
या ही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सभ मन मं ॥४३॥७॥

जब लोगों की सोच ही बीमार हो जाए तो इसका क्या इलाज? इस बादशाह दरवेश के बारे में दहशत में आये मुगल अहलकारों की नकारात्मक रिपोर्टों से आतंकित हुक्मरान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बढ़ रही लोकप्रियता को अपने लिए एक खतरा महसूस कर रहे थे। इस बादशाह दरवेश का रूहानी व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि उनके श्रद्धालु उन्हें सच्चा पातशाह मान कर नमन करते थे। उनका सुयश एवं बढ़ती

**Navnit Niwas, Near Gurdwara, Rani Bazar, Bikaner (Rajasthan)-334001*

हुई शक्ति की गुप्तचर रिपोर्ट और कमजोर मानसिकता वाले बलहीन पहाड़ी रजवाड़ों की शिकायतों का प्रभाव मुगल बादशाह औरंगजेब पर असर दिखाने लगा और उसकी आशंकाएं बढ़ने लगीं। मो. कासिम 'इब्रत' के 'इलतनामा' के अनुसार उसने सरहिंद के फौजदार वजीर खां को निर्देश किया कि "अगर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने पूर्वजों की भांति रहे, अपने आप को बादशाह कहलाने का ख्याल छोड़ें और राजाओं की तरह प्रजा को दर्शन देना बंद करें तो अच्छा होगा और अगर शहंशाहों की नकल करना न छोड़ें तो वजीर खां अपनी शक्ति का प्रयोग करे और उनके सदनों को नष्ट करने का प्रयास करे तथा उन्हें वहां से निकाल दे।" यह वजीर खां के लिये आसान कार्य न था। इस कार्य हेतु उसने गुरु जी के पास पत्रों का आदान-प्रदान किया। उन्हें गाय की, कुरान शरीफ की कसमें खाकर यकीन दिलाने की चेष्टा की गई कि अगर वे अनंदपुर साहिब का किला छोड़ देंगे तो उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा! बेशक गुरु जी को उनकी बेईमानी का पता था और दृष्टांत देकर उन्होंने उनकी बेईमानी उजागर भी कर दी थी परन्तु सिखों और अपनी माता जी के हुक्म की पालना करते हुए अनंदपुर साहिब छोड़ा एवं परिणाम भी भोगे। उन्होंने यह तथ्य जफरनामा में भी औरंगजेब पर उजागर किया।

बादशाह के आदेशों का पालन पहले वजीर खां ने शिवालिक की पहाड़ियों के पहाड़ी राजाओं से कराने को कहा था जिन्हें फौज रखने के मंसब प्रदान थे। फिर सूबे के राजकुमार मुअज़्ज़म को भेजा वह भी बिना कारवाई किये चला गया और उसने औरंगजेब की नाराज़गी झेली। अंततः इम्पीरियल फौज की मदद अथवा इलाके के समुदाय विशेष की भावनाएं भड़का कर घेराबंदी का छल-कपट का सहारा लिया गया। दुखद घटनाएं घटीं और ये सभी असफल रहे।

राजस्थान स्टेट आर्काईवज बीकानेर में उपलब्ध फारसी वकील की रिपोर्टस की अंग्रेजी डिस्कृप्टिव लिस्टों के अध्ययन से पता चलता है कि बादशाह औरंगजेब की इम्पीरियल कोर्ट से आमेर नरेशों को भी नगाड़ा बजाने की स्वीकृति किसी विशेष सराहनीय कार्य करने अथवा अच्छे दाम देकर मिलती थी। वकील मेघराज ने आमेर महाराजा को ३ रमजान, १११६ हिजरी अर्थात् १९ दिसंबर सन् १७०६ ई. को लिखा कि सरकार ने उन्हें नगाड़ा प्रदान करने से इंकार कर दिया है, क्योंकि वे इसके हकदार नहीं। (S.No. 762/1190) परन्तु वकील केशो राय ने आमेर के राजा राम सिंह को २६ रजव १०९९ हिजरी अर्थात् १७ मई सन् १६८८ ई को रिपोर्ट भेजी (S.No. 130/896) कि जाटों के विरुद्ध कारवाई करने पर नौबत और नगाड़ा प्रदान होंगे। इसी प्रकार निपोर्ट वकील केशो राय ने आमेर नरेश की ७ रजव ११०१ A.H. अर्थात् ६ अप्रैल १६९० ई. को भेजी कि उनके विरुद्ध एक खुफिया रिपोर्ट गंगौर जलूस में ढोल बजवाने की बादशाह के पेश नहीं होने दी है। इसका मतलब, राजा बादशाह की मन्जूरी न होने की वजह से बादशाह के गुस्से से डरते थे। परन्तु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में तो नगाड़ा प्रत्येक दीवान की अरदास में सदैव बजता था और दीवान शुरू होते समय घड़ियाल की टन-टन दीवान की सूचना देती थी। शिवालिक की वादियां नगाड़े की गूंज से दहल उठती थीं। नगाड़े की गूंजती आवाज से पहाड़ी रजवाड़े भयान्वित रहते थे। खुफिया रिपोर्टस के

आधार पर औरंगजेब ने फौजदार सरहिंद तथा फौजदार सरहिंद ने मंसबदार राजाओं को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा अपने दीवानों अथवा दरबार में नगाड़ा बजाना बंद करने के निर्देश कर रखे थे, परन्तु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह धार्मिक प्रक्रिया बंद नहीं की थी। उस समय के हाकिमों का जनता की धार्मिक गतिविधियों पर यह सीधा हस्तक्षेप था। धार्मिक जोड़-मेलों पर जजिया टैक्स पुन: लागू कर दिया गया था। राव, राजा, महाराजा, सवाई महाराजा एवं मिर्जा राजा के खिताब जनता द्वारा नहीं यह खिताब भी मुगल सम्राटों की इच्छा अनुकूल किसी हकूमत की दृष्टि में सराहनीय कार्य को अंजाम देने पर प्रदान किये जाते थे। तात्पर्य यह है कि दरबार लगाना, इसमें नगाड़ा बजना, अमीरी पोशाक का पहनना, कलगी सजाना, घोड़े की सवारी, तीर-तलवार-शस्त्र पहनना, शिकार खेलना, बाज रखना, दरबार में संगत को दर्शन देना, दसवंध स्वीकार करना और संगत का उन्हें माथा टेकना, गुरबाणी के शबद-गायन में वाद्य यंत्र बजाना और पहरावे में हीरे-मोतियों की मालाएं पहनना बेशक मुगल शासकों को दरवेशों का वेष नहीं लगता था, मगर यह तो मन का चाव है और प्रत्येक मनुष्य का निजी शौक। इनमें से कई शौक तो हकूमत प्रदान करती थी, जैसे कुछ जातियों के गांवों में से अब भी कोई व्यक्ति ऊंट या घोड़े पर सवार होकर नहीं गुजर सकता था। आज भी राजपूतों के गांवों में तथाकथित निम्न वर्ग के लोग घोड़े पर सवार होकर बींद (दूल्हा) भी नहीं निकल सकता। नौबत नगाड़ा की सनद भी हाकिम प्रदान करते थे। आज भी कोई किसी मस्जिद के आगे से बैंड बजा कर नहीं निकल सकता था। यह मानसिकता उस समय कानून ही बन गई थी।

जिस धर्म का आधार ही साजों से बाणी का गायन हो वह कैसे इन बंधनों का पालन करेगा? पहले गुरु श्री गुरु नानक देव जी भाई मरदाना जी की रबाब पर शबद-गायन करते थे। यह उपकार उन्होंने देश के कोने-कोने में किया। धुर की बाणी जब आती थी कोई उसे रोक नहीं सकता था। बाबर की जेलों की चक्कियों ने भी गुन-गुना कर उनकी सुर में सुर मिलाई। जब श्री गुरु अरजन देव जी गर्म तवी पर बैठ कर बाणी में विलीन हुए तो लटलट जलती आग ने भी सोहिले गाये। इस बाणी की सुरों और चरखियों की झूम, उबलती देग की गदगद और चिनी जा रही सरहिंद की दीवार की ईंटों की खनखनाहट ने शहीदों के मन गुदगुदाए और वे मुस्कराते हुए शहादत का जाम पी गए। नगाड़े की आवाज़ और घड़ियाल की घंटी उनको जुड़ने की आवाज़ देती है। फिर अब्दाली या औरंगज़ेब उन्हें रोक नहीं सकता। घड़ियाल और नगाड़े आज भी बजते हैं और अमृत की बूंद के मुतलाशी आज भी तोपों का मुंह मोड़ कर यह जामे-शहादत पीने चले आते हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की हजूरी में ५२ कवि विराजमान थे। उनमें एक कवि सैनापति भी थे। उन्होंने अवश्य ही गुरु साहिब के अनेक बार दर्शन किये होंगे। उन्होंने गुरु-काल में ही लिखी पुस्तक 'श्री गुर सोभा' में गुरु साहिब की सज्जा का वर्णन निम्न प्रकार से किया है :

सीस पै ताज लै सोन कलगी धरी लाल हीरे जरी जगमगावै।

हीरा पन्ना खरे और मोती जरे झलक छब सोभ ता की सुहावै।

झोक ऐसे लसै जोत फुंदन दिस सोभ आपार नहीं

बरनि आवै।
प्रगटि प्रचंडि त्रईलोक शोभा करै पेखे तिह संत सुख सरब पावै॥१०॥६०५॥
चिलता करिकै सब साजही सों बरनो हथियार कहे सब ही।
कटिसो तरवार बनी जमधार आली बंद ढाल फबै जब ही।
दिस दाहन बान कमान सजै कर मै बरछा करौ छिन मैं ही।
सब दूतन छार करो छिन मैं कहि गोबिंद सिंघ चढ़े तब ही ॥११॥६०६॥

बादशाह दरवेश के घोड़े की सजावट भी सैनापति जी ने निम्न प्रकार से की है। इसमें सजावट ही नहीं बल्कि घोड़े की नसल भी दर्ज की है :

तुर्की असु अछ सुविछ बडो तिह उपर पाखर आन धरी।
छब सोहत ज़ीन ज़रा इन की सब साज़ि समेत अनूप खरी।
गज मतिन के गुल बंदन के कलगी सिर सोभ जराव जरी।
बरनो छब यो जल चाल चलै छिप है तिह देखत हूर परी ॥५॥६००॥

तुर्की घोड़े की कलगी एवं पानी की तरह चाल का उल्लेख सैनापति ने किया: *"सौ सौ कोस भगे ही जैं हैं।"* आम जन को यह सौभाग्य प्राप्त नहीं है परन्तु खालसा पंथ में घोड़ों का खास महत्त्व था। ये घोड़े उन्हें राजा-महाराजा भेंट करते थे। इतिहास गवाह है कि आमेर नरेश राम सिंह ने असम की मुहिम से लौट कर श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के उपरांत अनंदपुर आकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को दो कीमती घोड़े भेंट किये थे। असम के राजा ने एक प्रसादी हाथी भेंट किया था। इसी प्रकार प्रसन्न होने पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भी अपने प्रिय सिखों को तलवार-घोड़े भेंट करते थे। ऐसा ही उदाहरण मिलता है जब भादरा यात्रा के दौरान गुरु जी ने भाई परम सिंघ, भाई धर्म सिंघ को तलवार-घोड़े बख्शिश किये थे। वे इतने भावुक हुए कि घोड़ों पर न बैठ कर उनको पकड़ कर पैदल ही साहवा पहुंचे। यह लिखने का तात्पर्य है कि गुरु जी के बख्शिश किये घोड़े सिखों के पास भी थे। भाई नंद लाल जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को यूं ही बादशाह दरवेश नहीं लिखा है। वे अपने सिखों के दिलों के बादशाह थे। वे तो आज भी बादशाह हैं परन्तु औरंगजेब की बादशाहत कहां है?

हीरे-मोती भी पत्थर ही हैं, मगर इसकी पहचान केवल जौहरी ही कर सकता है। जिस हीरे को संकीर्ण विचारों से लवरेज औरंगजेब न पहचान सका उसकी कीमत उसके बड़े लड़के मुअज्जम ने वसूल पाई और गुरु जी के आशीर्वाद एवं मदद से छोटे भाई से बादशाहत छीन कर अपना कानूनी हक हासिल किया। उस उपकार के बदले में केवल इंसाफ की मांग की। औरंगजेब के कार्यकाल में इम्पीरियल आतंकवाद का जहर राष्ट्र की रगों में इतना फैल चुका था कि राष्ट्र का सारा ढांचा ही चरमरा गया था। बीमार सोच के लोग श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रभाव समाप्त करना चाहते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को शारीरिक तौर पर तो राष्ट्र-रंगमंच से हटाने में सफल हो गये मगर उनके आसमानों पर लिखे लेख और पदा-चिह्न नहीं मिटा सके। तत्पश्चात भड़की ज्वाला ने सरकारी आतंक के धराशाही होने के संदेश दे दिये।

बहादुर शाह पर उसकी हिन्दू पारिवारिक

पृष्ठभूमि वाली मां, जो कि राजौरी की राजकुमारी थी, का बड़ा प्रभाव था। वह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रति उनके व्यवहार से विदित था और गुरु जी को दरवेश मानता था। उसका लिखित प्रमाण 'बहादर शाह की दरबारी रिपोर्टस' से मिलता है। गुरु जी के ज्योति जोति समाने के उपरांत उनकी सम्पत्ति जब्त करने बाबत जब रिपोर्ट पेश की गई तो उसने लिखा कि दरवेश की सम्पत्ति से खजाना भर नहीं जायेगा और दरवेश की सम्पत्ति में हस्तक्षेप न करने के आदेश दिये। इससे पहले भी अनंदपुर साहिब में पहाड़ी राजाओं के विफल होने पर औरंगजेब ने उसे अनंदपुर साहिब भेजा।*"तब अउरंग मन माहि रिसावा ॥ मद्द्र देस को पूत पठावा ॥"* *(बचित्र नाटक)* उसने मिर्जा बेग अहदिये को भेजा। वह गुरु साहिब को माथा टेककर चला गया और जो गुरु जी को छोड़ कर डरते भाग गये थे उन्हें सजाएं देकर वापस चला गया।

मोहम्मद कासिम 'इब्रत' ने 'इब्रतनामा' में लिखा है कि उनका प्रभाव पांच हजार जाति के राजाओं से भी अधिक था और 'हिस्ट्री आफ इंडिया बाई इटस ओन हिस्टोटियन्स' कृत इलियट एवं डाऊसन ने लिखा है कि वे सफर के दौरान भी दीवान सजा कर अकाल पुरख का संदेश देते थे। सिख इतिहास श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को 'संत-सिपाही' के नाम से याद करता है और प्रत्येक सच्चा सिख उस संत-सिपाही की परम्परा को जीवित रखे हुए है।



. . . श्री गुरु गोबिंद सिंघ *(पृष्ठ १० का शेष)*

वह प्रगटिओ मरद अगंमड़ा वरीआम इकेला।
वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥१७॥४१॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में गुरु का दान

परलोक-गमन से पहले नांदेड़ (महाराष्ट्र) में गुरु जी ने आदेश दिया- *"सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानीओ ग्रंथ। गुरू ग्रंथ को मानीओ प्रगट गुरां की देह। जो प्रभ को मिलबो चहै खोज सबद मै लेह।"* अर्थात् मेरे बाद यह धार्मिक ग्रंथ ही आपका गुरु होगा। जो भी आस्था लेकर इस पावन ग्रंथ की बाणी का पठन-पाठन करेगा, उस पर विचार व अमल करेगा, उसे निश्चय ही प्रभु-मिलन का सौभाग्य प्राप्त होगा।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब भारत की समस्त आध्यात्मिकता की धरोहर हैं, क्योंकि इसमें छ: सिख गुरु साहिबान के साथ-साथ भारत के ३० अन्य संतो-भक्तों की बाणी भी अंकित है, जो विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं, प्रदेशों से संबंधित हैं। अत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब प्रभु की अनेकता में एकता का जीवंत उदाहरण हैं, यहां जात, धर्म, वर्ण, भाषा, ऊंच-नीच का कोई झगड़ा नहीं, बस प्रेम ही प्रेम है, क्योंकि अंतत: ईश्वर प्रेम ही तो है।

काश! हम सब श्री गुरु ग्रंथ साहिब के ३००वें गुरगद्दी पर्व में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित प्रेम, शांति, सद्भावना सभी धर्मों के प्रति आदर, मानव-मात्र एक ईश्वर की संतान है, परस्पर भाईचारा, धार्मिक स्थलों की समानता, सभी इबादत के तरीकों को समान मान्यता जैसे मूल्यों, आदर्शों को अपना कर इंसानियत का परिचय दें। गुरु जी के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।



श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का मानवतावाद
"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो"

*-प्रो. लालमोहर उपाध्याय**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज का आगमन २३ पौष संवत १७२३ तदानुसार २२ दिसंबर १६६६ ई को हुआ। स्वाभाविक है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पटना साहिब में महाराज ने जीवन का मूल-मंत्र दिया-

हिंदु तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥१५॥८५॥
(अकाल उसतत)

इतना ही नहीं करीम और रहीम में एक ही ज्योति का दर्शन करने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने डंके की चोट पर कहा कि सम्पूर्ण विश्व का गुरु एक ही ब्रह्म है :

करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सब ही को गुरदेव एक
एक ही सवरूप सबै एकै जोत जानबो ॥१५॥८५॥
(वही)

सच तो यह है कि अल्लाह एवं राम तथा कुरान एवं पुरान में तत्वत: कोई भेद नहीं है:

देहरा मसीत सोई पूजा ओ निवाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू
निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥ . .
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥१६॥८६॥
(वही)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ की महाराज ने पथ-भ्रष्ट जनता को सही मार्ग दिखाने के लिए धर्म, जाति, देश-भाषा के कारण उत्पन्न विभिन्नता समाप्त कर भावात्मक एकता स्थापित करने के उद्‌देश्य से यह समझाया कि मंदिर-मस्जिद, पूजा-नमाज, देव-गंधर्व, हिंदू-मुसलमान में मूलत: कोई भेद नहीं है। यह केवल बाहरी दिखावा है। इतना ही नहीं आत्मा भी परमत्मा का ही अंश है :

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है
धूरि के कनूका फेर धुरि ही समाहिंगे ॥
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत हैं
पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे ॥
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ
ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१७॥८७॥
(वही)

इसलिए तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समय की मांग के अनुसार वैसाखी १७५६ वि. (१६९९ ई) के दिन अनंदपुर साहिब (पंजाब) में खालसा पंथ का सृजन कर अछूत एवं दलित वर्ग के स्वाभिमान को बढ़ाया और अपने चमत्कारी व्यक्तित्व के प्रभाव से चिर-शोषित और चिर-उपेक्षित जनसाधारण को राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का दुर्जेय योद्धा बनाकर दिखला दिया कि मनुष्य जाति एक है, इसमें कोई भेद नहीं समझना चाहिए।

उन्होंने खालसा पंथ की सृजना करते वक्त जात-पात एवं प्रदेश का भेद मिटाकर पांच प्यारों को नये नाम दिए जो इस प्रकार हैं— (१) भाई दया राम (खत्री, लाहौर) का नाम

**टिकियाटोली, मोगलपुरा, पटना साहिब-८०००० ८ (बिहार)*

हो गया भाई दया सिंघ, (२) भाई धर्म चंद (जाट, दिल्ली) का नाम हो गया भाई धर्म सिंघ, (३) भाई मोहकम चंद (छींबा, द्वारिका) का नाम हो गया भाई मोहकम सिंघ, (४)भाई साहिब चंद (नाई, बिदर) का नाम हो गया भाई साहिब सिंघ तथा (५) भाई हिम्मत राय (झीवर, उड़ीसा) का नाम हो गया भाई हिम्मत सिंघ। श्री गुरु गोबिंद राय जी हो गये श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी।

इस तरह उन्होंने विश्व के समक्ष लोकतंत्र और समाजवाद का एक अद्यतन दृश्य उपस्थित किया। इसमें दो मत नहीं कि जात-पात एवं छुआ-छूत का रोग समाज की शक्ति को घुन के कीड़े की तरह खाता जा रहा था। ऐसी विषम परिस्थिति में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने युग की चुनौती को स्वीकार किया और अपने असीम साहस, दृढ़ संकल्प और अपनी आश्चर्यचनक प्रतिभा से समाज की प्रलयधारा को मोड़ दिया। उन्होंने संगत (सहचिंतक) व पंगत (सहभोजन-लंगर) की अनुपम रीति को आगे बढ़ाकर जन-साधारण को एकता में पिरो दिया। आपके वचन हैं :

—साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥ *(सवैये)*
—मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
(अकाल उसतत)

अल्ला यार खां योगी ने पूरे विश्वास के साथ कह दिया है :

इन्साफ करे जमाना तो मुझको यकीं है।
कह दे कि गुरु गोबिंद का सानी नहीं है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की त्याग-भावना भी कम प्रेरणादायक नहीं है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दूसरों के लिए न केवल अपने प्राण न्योछावर किए वरन् जो कुछ भी अपना था, वह सारा देश को अर्पण कर दिया। अपने प्यारे चारों सपुत्रों को भी धर्म पर कुर्बान कर दिया, अपना सर्वस्व देश के लिए न्यौछावर कर दिया।

इतना ही नहीं, भारतीय संस्कृति एवं धर्म की रक्षा में उनका योगदान अपूर्व रहा है। यह एक अभूतपूर्व घटना है कि मात्र नौ वर्ष की उम्र में और वह भी माता-पिता का इकलौता पुत्र होते हुए भी उन्होंने तिलक जनेऊ को जबरन समाप्त करने के विरोध में अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज को शहीद होने के लिए प्रेरित किया, जिनकी यादगार में निर्मित नई दिल्ली में गुरुद्वारा सीसगंज साहिब एवं गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब मानवीय एकता के ज्वलंत उदाहरण हैं। राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी सच ही कहा है :

क्या चिंता यदि अस्त हो गया, तेग बहादर रूप चंद।
देखे गुरु गोबिंद दिवाकर, उदित हुआ वह नितंब।
सिख सिंघ के भाग्य-विधाता, निर्माता थे गुरु गोबिंद।
जो दे गये वंश की बलि, वे दाता थे गुरु गोबिंद।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की समदृष्टि का ज्वलंत उदाहरण युद्ध के मैदान में भी देखा जा सकता है। युद्ध के मैदान में उनके एक शिष्य भाई घनईया जी सिख एवं मुसलमान दोनों पक्षों के घायल अपाहिजों को पानी पिला रहे थे। इस पर कुछ सिख सिपाही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास जाकर भाई घनईया जी की शिकायत करते हैं कि वह अपने दुश्मन मुसलमान सिपाहियों को भी पानी पिलाता है। इस पर गुरु जी ने स्पष्टीकरण दिया—यह हमारा कर्त्तव्य है, मानवता के लिए जरूरी है। पानी पिलाने की बात तो क्या वह उन घायलों की मरहम पट्टी भी किया करे। यही हमारा धर्म है।

वास्तविकता तो यह है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का मानवतावाद सार्वकालिक है।

उनकी लड़ाई इस्लाम एवं मुसलमानों के खिलाफ नहीं थी, वरन् मुगल साम्राज्य द्वारा किए जा रहे धर्म पर कुठाराघात, जुल्म एवं अत्याचार के खिलाफ थी। उन्होंने स्पष्ट लिखा है :

दसम कथा भागौत की भाखा करी बनाइ ॥
अवर बासना नांहि प्रभ! धरम-जुद्ध के चाइ ॥
(दशम ग्रंथ)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है: "धन्य है वह देश, जहां गुरु गोबिंद सिंघ जी उत्पन्न हुए थे। उन्होंने इस देश की जनता की अपार शक्ति का उद्घाटन किया। उनका स्मरण करके हम आज भी नई प्रेरणा और शक्ति पा सकते हैं, पा रहे हैं।"

आज जरूरत इस बात की है कि हम सभी संकल्प लें—देश की एकता, अखण्डता, विश्व-बन्धुत्व एवं सेवा के लिए, हम संकल्प लें उनके संदेश—*"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो"* को ईमानदारीपूर्वक जीवन में उतारने का, प्रयोगात्मक रूप देने का, तभी हम गुरु के सच्चे सिख हो सकते हैं। 

कविता

पूज्य गुरु गोबिंद सिंघ जी

वीर शिरोमणि
महान परम्पराओं के ध्वज वाहक,
अरिमर्दन करने वाले
सिंघों के सिंघ थे तुम।
पूज्य पिता नवम् गुरु को
स्वै-बलिदान को प्रेरित करने वाले,
बचपन से ही
तेजस्विता के पर्याय थे तुम।
चारों पुत्रों का बलिदान देकर
मानवता की अस्मिता को
अक्षुण रखने वाले,
अद्भुत जीव के धनी,
त्याग की सजीव प्रतिमूर्ति,
अद्वितीय देश-भक्त थे तुम।
सर्वधर्म समभाव के पोषक,
दुखियों के उद्धारक,
मूल्यों के संरक्षक,
खालसा पंथ के सृजनहार,
सिखों को नई पहचान देने वाले,
खालसा पंथ के सृजक थे तुम।
आदि ग्रंथ साहिब को
गुरु-पद पर आसीन कर,
'गुरु ग्रंथ साहिब' के रूप में
सिखों ही नहीं
विश्व भर को अनूठा बेशकीमती,
उपहार देने वाले
महान युगदृष्टा थे तुम।
विद्वानों को
प्रश्रय देने वाले,
दुष्टों का संहार कर
राष्ट्र को नई दिशा देने वाले,
विलक्षण संत-सिपाही थे तुम।
तुम जैसा कोई हुआ न होगा,
कुर्बानी की लट-लट जलती मशाल
अपनी मिसाल स्वयं थे तुम।
त्याग और बलिदान के
पर्याय थे तुम।
सिखों को अमृत-पान कराकर
एक नये युग का
सूत्रपात करने वाले
युग-प्रवर्त्तक, युग-पुरुष थे तुम।



-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर (हरियाणा)।

बचित्र नाटक में चित्रित आध्यात्मिकता

*-डॉ. आशा अनेजा**

युगपुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, जिनसे भारत की आत्मा उपकृत हुई, उन्हें रहती मानव-जाति तक स्मरण किया जाता रहेगा। तेज के पुंज श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस समय पंजाब की धरती से भारत का नेतृत्व किया जब देश में चारों तरफ अन्याय और अत्याचार का तिमिर फैला हुआ था। कहने को भारत में धन-दौलत की कोई कमी न थी पर एकता, संगठन तथा स्वाभिमान के अभाव में कुछ भी दिखाई न दे रहा था। अकाल पुरख की कृपा से अन्याय और अत्याचारों से झुलस रहे लोगों की रक्षा तथा अधर्म के विनाश हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पटना साहिब में प्रकाश हुआ।

उच्च कोटि के कवि, महान योद्धा, अत्याचारियों के संहारकर्त्ता, समाज-सुधारक, उत्तम संगठनकर्त्ता, कुर्बानी के पुंज गुरु जी आध्यात्मिक विभूति थे। १६७५ ई. में गुरगद्दी पर विराजमान होने के पश्चात् उन्होंने पहाड़ी राजाओं तथा मुगल हुकूमत से जम कर लोहा लिया। इन्हीं युद्धों तथा जुल्म विरुद्ध संघर्ष में इनके चारों सपुत्रों ने शहीदी प्राप्त की। खालसा पंथ की स्थापना करने वाले गुरु जी महान साहित्य की रचना करने वाले भी रहे। ऐतिहासिक और मिथिहास की दृष्टि से गुरु जी की आत्म-कथा बचित्र नाटक का अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इस आत्म-कथा का चौदह अध्यायों में दिया गया है, जिसमें देश की पूर्वकालिक परिस्थितियों का विवरण देने के बाद गुरु जी ने अपने जन्म, शिक्षा-दीक्षा तथा उनके द्वारा देखे और किये गये युद्धों का वर्णन किया है। बचित्र नाटक में गुरु जी ने धर्म के वास्तविक स्वरूप का परिचय मानवीय गुणों के आधार पर दिया। इसमें गुरु जी ने आध्यात्मिक स्तर पर परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान लोगों को कराया तथा उन्हें जागृत किया।

बचित्र नाटक में गुरु जी ने परमात्मा के निर्गुण-निराकार रूप को मान्यता दी। उन्होंने बताया कि परमात्मा निराकार, नित्य और आकार से परे है। परमात्मा का न आदि है, न अंत है; न वह बालक है न वृद्ध, न राजा है न रंक। उसका कोई माता-पिता नहीं। वह स्वामी तथा सबसे बड़ा धर्मात्मा है :

निरंकार त्रिबिकार नित्यं निरालं ॥
न ब्रिधं बिसेखं न तरुनं न बालं ॥
न रंकं न रायं न रूपं न रेखं ॥
न रंगं न रागं अपारं अभेखं ॥४॥१॥

गुरु जी मानते हैं कि परमात्मा मंत्र में महामंत्र तथा काल में महाकाल है। महाकाल के सम्बंध में गुरु जी कहते हैं कि महाकाल के बायें हाथ में धनुष है और दायें हाथ में डरावनी तलवार। उसके हाथ का डमरू डम-डम बजता है। अग्नि की तरह लाल जीभ है तथा मोटे और लाल नेत्रों के प्रकाश के सामने करोड़ों सूर्य भी लज्जा का अनुभव करते हैं। जब वह शंख बजाता है तो इतने भयंकर शब्द निकलते हैं कि जैसे काल-ज्वाला भड़क उठी हो :

डमाडम्म डउरू सिता सेत छत्रं ॥
हाहा हूह हासं झमा झम्म अत्रं ॥
महा घोर सबदं बजे संख ऐसे ॥
प्रलै काल के काल की ज्वाल जैसे ॥१९॥१॥

गुरु जी महाकाल की अपार शक्ति का

*अध्यक्षा हिंदी विभाग, ३०६/१, खुड्ड मोहल्ला, सिविल हॉस्पिटल रोड, लुधियाना। मो ९४१७९-७७२००

वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि महाकाल के शस्त्र चौदह लोकों में चलते हैं। जंत्र-मंत्र पढ़ने वाला भी उससे बच नहीं सकता। महाकाल के कराल हाथ दुर्गों के ओट बनाने वाले को पकड़ लेते हैं। काल के अनेक राक्षसों, दानवों को कुचल दिया। जिन्होंने इस संसार पर शासन किया, अनेक सुखों को भोगा, वे भी नंगे हाथों काल के साथ विवशता से चल पड़े।

इसी काल को ही गुरु जी 'महाकाल', 'सर्वकाल' तथा 'श्रीकाल' आदि नामों से पुकारते हैं। इसकी अपराजेय शक्ति को देखते हुए ही गुरु जी ने इसे अकाल पुरख माना है तथा वे इसे खड़गपाणि, कृपाणपाणि, चक्रपाणि, धनुषवाणधारी तथा दण्डधारी कहते हैं :

काल ही पाइ भयो भगवान सु जागत या जग जा की कला है ॥
काल ही पाइ भयो ब्रहमा सिव काल की पाइ भयो जुगीआ है ॥
काल ही पाइ सुरासुर गंध्रब जच्छ भुजंग दिसा बिदिसा है ॥
और सुकाल सभै बस काल के एक ही काल अकाल सदा है ॥८४॥१॥

काल की इच्छानुसार ही भगवान विष्णु पैदा हुए, ब्रह्मा प्रकट हुए तथा शिव अवतरित हुए। काल से ही देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष आदि उत्पन्न हुए हैं। सभी पदार्थ काल के अधीन हैं तथा काल ही अकाल पुरख है।

गुरु जी परमात्मा के दुष्ट-दमन रूप में तथा अस्त्रों-शस्त्रों में इतने लीन हो गये कि खड़ग ही उनके लिए अकाल पुरख का प्रतीक बन गयी। इसी कारण उन्होंने बचित्र नाटक के आरंभ में खड़ग की स्तुति की है :

नमस्कार स्री खड़ग को करों सु हितु चितु लाइ ॥
पूरण करों गिरंथ इहु तुम मुहि करहु सहाइ ॥१॥१॥

गुरु जी खड़ग, खंडा, कृपाण और कटार को अकाल पुरख का रूप मानते हुए नमस्कार करते हैं। गुरु जी कहते हैं कि अकाल का वर्णन वर्णनातीत है। काल की कृपा से मूढ़ शास्त्र पढ़ने लगता है, पिंगला पहाड़ चढ़ जाता है, अंधा देखने लगता है तथा बहरा सुनने लगता है। वे कहते हैं कि मैं काल की महिमा का बखान नहीं कर सकता। यह काल चाहे रूपातीत है, वर्णनातीत है, पर अकाल पुरख की तरह यह संत-जनों की दुष्टों से रक्षा करता है। गुरु जी मानते हैं कि काल ने सदैव उनकी भी हाथ देकर रक्षा की है :

सरब काल सभ साध उबारे ॥
दुखु दै कै दोखी सभ मारे ॥
अदभुति गति भगतन दिखराई ॥
सभ संकट ते लए बचाई ॥१॥१४॥

गुरु जी ने बचित्र नाटक में अकाल पुरख के सभी रूपों का अर्थात् अजेय, भक्त-वत्सल, रौद्र तथा विशाल वर्णन किया है। गुरु जी ने काल के माध्यम से यह बताया कि महान देव, दैत्य, राजा-महाराजा कोई भी काल की शक्ति का सामना नहीं कर सकता।

बचित्र नाटक में गुरु जी ने दो शक्तियों का वर्णन एक साथ किया है—राजसी शक्तियां और आध्यात्मिक शक्तियां। मुगल शासक बलशाली दैंत्यों के समान थे। खास तौर पर औरंगजेब शूरवीर था, अत्याचारी था तथा अनेक लोगों के कष्टों का कारण था। लोग उसे महाशक्तिशाली मानते थे। पर गुरु जी ने जनता के मन में यह भाव पैदा कर दिया कि अकाल पुरख के सामने कोई टिक नहीं सकता। वहां औरंगजेब भी शक्तिहीन होगा। गुरु जी के इस संदेश से जनता औरंगजेब के अन्याय के विरुद्ध खड़ी हो गयी। अकाल पुरख के माध्यम से गुरु जी ने जनता को शक्ति, उत्साह तथा क्षमता का संदेश दिया, जिससे लोगों की निराशा कम हो गयी।

इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बचित्र नाटक के माध्यम से वास्तविक धर्म को जीवन में उतारने के लिए आध्यात्मिक दृष्टि दी। आज के समय में भी मूल्यों को बनाये रखने के लिए यह दृष्टि प्रासंगिक और आवश्यक है।



श्री गुरु हरिराय साहिब जी

*-स. सुरजीत सिंघ**

श्री गुरु हरिराय साहिब जी समाज-मर्यादा के आदर्श हैं और भारतीय सस्कृति की सामाजिक एवं धार्मिक विशिष्टताओं के प्रतीक हैं। आपके आदर्श एवं त्यागमयी जीवन से भारतवर्ष की धार्मिक, सामाजिक मर्यादा एवं आदेश अभिव्यक्त हुए हैं। श्री गुरु हरिराय साहिब जी का जन्म १९ माघ, सं. १६८६ तदानुसार (१६ जनवरी, सन् १६३०) को कीरतपुर (पंजाब) में बाबा गुरदित्ता जी के घर हुआ। आपकी माता जी का नाम माता निहाल कौर जी था, जो उदारता एवं ज्ञान की प्रतिमा थीं।

प्रारंभ से ही आप सरल, सहज, भक्तिभाव, प्रेम, त्याग एवं शान्ति वाले कर्मयोगी थे और सद्भावना, परोपकार एवं धार्मिक निरपेक्षता जैसे गुण आपको अपने दादा जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी से विरासत में मिले थे। लगातार ३ वर्ष तक अकाल पड़ने के समय आप ने हर वर्ग-समाज की तन, मन, धन से अथाह सेवा की। मानवीय दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि आपके कार्यों में जनचेतना और जनहित की भावना निहित थी। आप ने प्रजातंत्र के तीन प्रमुख—स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के मूल्यों को पूरी तरह से स्थापित किया है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि गुरु जी के इस त्याग में कहीं आवेश नहीं है, अनुचित वेग नहीं है, सब कुछ सहज स्वाभाविक है। मनुष्य-जन्म दुर्लभ है, इसको व्यर्थ में नहीं गंवाना चाहिए, अपितु ईश्वर-भक्ति और मानव-सेवा ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। यह जगत नाशवान है। इस अनित्य देह में केवल मात्र जीवात्मा ही अमर है, शेष तो बालू (रेत) के ढेर की तरह अस्तित्वहीन है, जिसके नष्ट होने में तनिक भी समय नहीं लगता। जो आज है वह कल नहीं और जो कल है वह परसों नहीं अर्थात् किसी वस्तु में स्थिरता नहीं है।

इस संसार में जीव संयोग-वियोग के सिद्धांत के अनुसार आता है और चला जाता है। इस क्षणभंगुर संसार में कई आ चुके हैं, कई जा रहे हैं और कई जाने की तैयारी में हैं। यह जीव झूठे लालच, "काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार" में लिप्त हुआ बैठा है, जबकि वास्तविकता यह है कि तन जो जन्म-समय साथ आया था, वह भी यहीं रह जाएगा। मुट्ठी बंद कर कुछ खास उद्देश्य के लिए आया था किन्तु जाते समय तो भिखारी की भांति हाथ पसारे हुए इस संसार से विदा लेता है। इस जिंदगी का क्या भरोसा कि अगला सांस आये अथवा नहीं!

आप दया, सेवा, सुमिरन, निर्भीकता एवं साहस आदि चारित्रिक गुणों के धर्मी थे। आप *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* और *"मानव मानव एक समान"* के मानवता और समानता के सिद्धांत का सर्वत्र निर्वाह करते हुए दृश्यमान होते हैं। गुरदेव जी ने सुख-दुख दोनों को एक समान समझकर पवित्र और वैर-विरोध रहित जीवन जीने का उपदेश दिया है।

(शेष पृष्ठ २६ पर)

***५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)*

भाई नंद लाल जी गोया

-डॉ. नवरत्न कपूर*

जीवन परिचय

भाई नंद लाल जी का जन्म सन् १६३३ में गजनी में हुआ था[१]। उनके पिता श्री छज्जू मल मुगल सम्राट् शाहजहां के मीर मुंशी थे। जनश्रुति है कि मुंशी जी के बेटे भाई नंद लाल जी से पहले पैदा हुए सभी बच्चे काल-कवलित हो गए थे। यही कारण है कि जब ढलती उम्र में उनके यहां पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई तो उन्होंने कोई खुशी न मनाई। किन्तु अन्य बालकों की मृत्यु वाली अवस्था से ऊपर आ जाने वाले "अपनी आंखों के तारे" भाई नंद लाल जी की शिक्षा की व्यवस्था मुंशी छज्जू राम ने विशेष रूप से की। एतदर्थ अरबी-फारसी पढ़ाने वाले एक विद्वान की नियुक्ति की गई। परिश्रमी एवं होनहार भाई नंद लाल जी कुछ ही वर्षों में सुशिक्षित हो गए और किशोरावस्था में ही गद्य एवं पद्य-रचनाओं द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने लगे। अभी वे वह १६ वर्ष की अवस्था के ही थे कि उनकी माता जी का निधन हो गया और लगभग तीन साल के पश्चात् उनके पिता जी स्वर्ग सिधार गए।

अनाथ भाई नंद लाल जी पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। उनके दो छोटे भाई भी थे। उस युग की परंपरा के अनुसार उन्होंने अपने पिता वाली मीर मुंशी की पदवी प्राप्त करने का प्रयास भी किया। तत्कालीन शासक भाई नंद लाल जी के गुणों से अपरिचित था। उसने उन्हें एक साधारण मुंशी के पद की पेशकश की, किन्तु स्वाभिमानी भाई नंद लाल जी ने उसे ठुकरा दिया।

दीवान छज्जू मल गजनी में काफी जमीन-जायदाद छोड़ गए थे। भाई नंद लाल जी उसे बेचकर अपने परिवार सहित मुलतान आ गए। मुलतान केवल एक राजनैतिक और धार्मिक केन्द्र ही नहीं, प्रत्युत् व्यापारिक दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण नगर था। सन् १६५२ में मुलतान के शासक नवाब वस्साफ़ खान ने भाई नंद लाल जी को अपने कार्यालय में मुंशी का पद प्रदान किया। किन्तु अपनी मेहनत और ईमानदारी के फलस्वरूप वे पहले तो मीर मुंशी के पद पर पहुंच गए, तदनंतर उन्हें भक्खर के किले का संरक्षक और सेनापति भी बना दिया गया। मुलतान के शासक ने यह आदेश भी जारी किया कि वे लोग अपने क्षेत्र के जमींदारों से पांच हजार रुपए पेशगी अथवा कर्ज के रूप में वसूल करके उसे भेजें। भाई नंद लाल जी ने यह कार्य बड़ी आसानी से पूरा कर दिखाया, जिसके पुरस्कार के रूप में उन्हें मुलतान के शासक ने कहरोड़, फतेहपुर और परगना महीउद्दीनपुर का नाज़म नियुक्त कर दिया।

भाई नंद लाल जी के पिता दीवान छज्जू मल वैष्णव संप्रदाय के वैरागियों के शिष्य थे, किन्तु भाई साहिब पर बाल्यावस्था से ही सिख धर्म का प्रभाव पड़ गया था। गजनी में श्री गुरु नानक देव जी के जीवन-काल में ही सिख-धर्मशालाएं (गुरुद्वारा साहिबान) स्थापित हो चुके थे, जहां पर श्रद्धालुजन प्रात: और सायंकाल में कीर्तन करने और गुरमति के प्रचार हेतु एकत्र हुआ करते थे। अत: भाई नंद लाल जी की

*Flat No. 901, Tower No. D-3, Sagar Darshan Towers, Palm Beach Rd., Sect. 18, Nerul, Navi Mumbai-400706

बाल्यावस्था में ही सिख धर्म के प्रति रुचि होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं थी। संयोग से उनका विवाह भी मुलतान निवासी एक गुरमति-प्रेमी परिवार की कन्या से हो गया, जिसके कारण भाई साहिब के बाल-संस्कार और सुदृढ़ हो गए।

बादशाह औरंगजेब की धर्मान्धता से दुखी होकर उन्होंने मुगल सरकार की नौकरी को लात मार दी। उस समय दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरगद्दी पर विराजमान थे। भाई नंद लाल जी अपने बाल-बच्चों की शिक्षा की सुव्यवस्था करके मुलतान से लाहौर पहुंचे और वहां कुछ दिन रुककर अमृतसर पधारे। अमृतसर में "श्री दरबार साहिब" के दर्शन से तृप्त होकर वे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शरणागति के लिए अनंदपुर साहिब पहुंचे।[२] अनंदपुर साहिब के अध्यात्मिक एवं साहित्यिक वातावरण के फलस्वरूप वे सिख गुरु साहिबान के प्रति श्रद्धा-भक्ति से भरपूर कविताएं रचने लगे। इस संबंध में डॉ. गंडा सिंघ का कथन है:

"अनंदपुर में सबसे पहली रचना, जो उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को भेंट की, वह "बंदगीनामा" थी। गुरु साहिब ने इस रचना की कथा शाम को सुनाने का हुक्म दिया। जब भाई साहिब ने अपनी रचना सुनाई तो वहां उपस्थित श्रद्धालुजनों ने उनकी खूब प्रशंसा की। कथा-समाप्ति पर गुरु साहिब ने भाई नंद लाल जी की विद्वत्ता और काव्य-कला की खूब शलाघा की और अपनी पवित्र लेखनी से पुस्तक के अंत में यह पद लिखकर आदेश किया कि इस रचना का नाम "जिन्दगीनामा" अधिक उपयुक्त है:

ज़ि आबि हैवां पुर शुद चू जामि ऊ
ज़िंदगी-नामा शुदा जां नामि ऊ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें 'दीवान' के पद पर नियुक्त करने की इच्छा प्रकट की, किन्तु आध्यात्मिक रंग में रंग चुके भाई साहिब ने "लंगर की सेवा" करने का आशीर्वाद मांगा। गुरु साहिब को जब यह ज्ञात हुआ कि उनके बालकगण अपनी माता के साथ मुलतान शहर में अपने ननिहाल में टिके हुए हैं तो उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि वे सिख श्रद्धालुओं को ऐसे को हुक्मनामे (आदेश-पत्र) जारी कर दें, ताकि उनके परिवार को उचित आदर-सम्मान दिया जाए? किन्तु भाई साहिब का उत्तर था :

"उनका खानदान काफी समय से नौकरी-पेशा रहा है और (वे) शहजादों तथा नवाबों के दीवान भी रह चुके हैं। आपकी कृपा-दृष्टि से उनका गुजारा भली-भांति हो रहा है। किसी भी तरह की भेंट मिलने से उन्हें मुफ्त में खाने की आदत पड़ जाएगी। आप केवल यही आशीर्वाद दीजिए कि मेरा खानदान ईमानदारी से अपना जीवन व्यतीत (दसां नौहां दी किरत) करता रहे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई नंद लाल जी की त्यागशीलता देखकर प्रशंसापूर्वक कहा: "धन्य (हो) भाई साहिब, धन्य (हो) भाई नंदलाल!"[३]

डॉ. गंडा सिंघ का कथन है कि भाई नंद लाल जी दिसंबर, १७०५ ई. तक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार "अनंदपुर" में ही विराजमान रहे।[४] एक अन्य प्रमाण के अनुसार वे सितंबर १७०८ ई. में बादशाह बहादुर शाह के एक वज़ीर की हैसीयत से शाही कैंप के साथ नांदेड़ (महाराष्ट्र) में मौजूद थे। बिना किसी आशंका के यह बात कही जा सकती है कि वे सन् १७१३ तक जीवित थे।[५]

भाई नंद लाल जी के दो सुपुत्र थे। बड़े बेटे का नाम था लखपत राय, जिसका जन्म सन् १७६३ ई. में हुआ था। छोटे बेटे का नाम था लीला राम, जिसकी पैदाइश सन् १७६५ ई. में हुई थी। दोनों उच्च पदों पर आसीन थे। लखपतराय नि:संतान ही स्वर्ग-सिधार गए थे।

लीला राम का पुत्र नौनिद्ध सिंह मुलतान में सेना में अधिकारी था। नौनिद्ध सिंह का बेटा मुंशी परसराम मुलतान के सूबेदार मुजफ़्फ़र खान के दरबार का एक प्रसिद्ध कर्मचारी था और तत्पश्चात् बहावलपुर रियासत के नवाब सादिक मुहम्मद खान द्वितीय के शासन काल में उच्च पद पर रहा। मुंशी परसराम के तीन बेटे थे : लाला नेभराज, स. चेला सिंह और लाला करमचंद।[६]

भाई नंद लाल जी की दस कृतियों और उनकी भाषा का विवरण इस प्रकार है :

(१) जिंदगी-नामा (फ़ारसी); (२) ग़ज़लीआत अर्थात् दीवानि-गोया (फारसी); (३) तौसीफ-ओ-सना और खातिमा (फारसी); (४) गंजनामा (फारसी); (५) जोत बिगास (फारसी काव्य); (६) जोत बिगास (पंजाबी काव्य); (७) रहित-नामा (पंजाबी काव्य); (८) तनखाह-नामा (पंजाबी काव्य); (९) दस्तूरुल इनशा (फारसी गद्य); (१०) अर्जुल-अलफाज (फारसी काव्य)।

काव्यगत नाम एवं उपनाम

भाई साहिब ने कहीं पर अपने पूरे नाम का उल्लेख किया है और कई जगहों पर 'लाल' अथवा 'गोया' उपनाम से काम चला लिया है। ऐसे कुछ उदाहरण लीजिए :

(क) पूरे नाम का प्रयोग

(१) सुणो नंद लाल एहो साच
परगट कराऊं आपणे राज।५६।
(तनखाह नामा)

(२) सुर गुर वार सतद्‌दरू तीर
बचन कहे नंद लाल सो बीर।३९।
(रहित नामा)

(ख) 'गोया' उपनाम का प्रयोग

हरगिज़ ब-सैरि रौज़ाइ रिज़्वां नमी खद
गोया कसे कि ज़ानीब कुइ बुतां गुज़शत।
(ग़ज़लीआत, ८/५)

अर्थात् गोया! जो कोई एक बार भी अपने प्रेमीजन की गली (कूचे) से निकल जाए, उसे फिर बहिश्त (स्वर्ग) के बाग की सैर करने की इच्छा नहीं रहती।

(ग) जोति बिगास (फारसी रचना) के अंत में 'नंद लाल गोया' और 'जोति बिगास' (पंजाबी रचना) के अंत में 'मुंशी नंद लाल मुलतानी' शब्द कवि के नाम के सूचक हैं।

पाद टिप्पणियां

१. डॉ. गंडा सिंघ (संपा.) : भाई नंद लाल ग्रंथावली, पृष्ठ १०
२. उपरोक्त पृष्ठ १७ ३. उपर्युक्त, पृष्ठ २०
४. उपर्युक्त, पृष्ठ २५ ५. उपर्युक्त, पृष्ठ २१-२४
६. वृहस्पतिवार के दिन सतलुज नदी के किनारे (स्थित आनंदपुर साहिब में)।



श्री गुरु हरिराय साहिब जी

(पृष्ठ २३ का शेष)

सामाजिक एवं राष्ट्रीय आदर्शों की दृष्टि से विचार करें तो हम गुरदेव को सदैव अन्याय एवं अधर्म की शक्तियों के विरुद्ध जूझते हुये देखते हैं अर्थात् गुरु जी का समस्त जीवन अनैतिकता एवं अधर्म के विरुद्ध एक निरंतर संघर्ष का जीवन है। असत्य एवं अंधकार पर सत्य एवं प्रकाश की जीत ही गुरदेव जी का मूलत: परमार्थ था। गरीब, मजलूमों और अबलाओं की रक्षा हेतु आपके पास २२०० घुड़सवार हमेशा तैयार रहते थे। आप अपनी जीवन-यात्रा पूरी करते हुये कीरतपुर (पंजाब) में परम ज्योति में विलीन हो गये। आवश्यकता है कि हम गुरदेव जी द्वारा दिखाए आलौकिक मार्ग का अनुसरण कर, घने अंधकार से निकलकर नयी रोशनी में प्रवेश करें।



हरि मंदरु एहु सरीरु है

-डॉ. अमृत कौर*

मानव इस सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है, जिसमें वह सृष्टा-प्रभु स्वयं निवास करता है। यह शरीर हरि का मंदिर है, जो ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित है :

—हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ *(पन्ना १३४६)*

—हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥ *(पन्ना ५७)*

ज्ञान से प्रकाशित इस हरि-मंदिर को प्रभु स्वयं संवारता है :

काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ *(पन्ना १०५९)*

ज्ञान के प्रकाश से निर्मल यह शरीर पूजनीय है।

इस हरि-मंदिर रूपी शरीर को प्रभु ने विशेष प्यार और सत्कार से निर्मित किया है, जिसे प्राप्त करने की देवता भी कामना करते हैं। अत: इस शरीर को देव-दुर्लभ कहा गया है, जो बड़े भाग्य से प्राप्त होता है :

इस देही कउ सिमरहि देव ॥
सो देही भजु हरि की सेव ॥ *(पन्ना ११५९)*

और यह देह पूजनीय बन जाती है जब आत्मा प्रभुमयी बन जाती है, तो :

कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥ *(पन्ना ६९५)*

अर्थात् काया परमात्मा है। काया प्रभु का मंदिर है और काया तीर्थ-स्थल है, जो मनुष्य को परमात्मा के घर तक पहुंचाती है।

मनुष्य की इस देह के भीतर अध्यात्म प्राप्ति हेतु अनुकूलता है :

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥ . . .
काइआ अंदरि रतन पदारथ भगति भरे भंडारा ॥ . . .
काइआ अंदरि ब्रहमा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ *(पन्ना ७५४)*

शरीर को सृष्टि का सूक्ष्म दर्शन कहा गया है। इस काया के अंदर सम्पूर्ण ब्रह्मंड विद्यमान है, परन्तु इसको प्राप्त वो करता है जो खोजता है :

—जो ब्रहमंडि खंडि सो जाणहु ॥ (पन्ना १०४१)

—जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ *(पन्ना ६९५)*

चौरासी लाख योनियों में मानव-योनि सर्वश्रेष्ठ है। उसने अपनी ज्योति इसमें स्थापित कर इसे संसार में भेजा है :

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ *(पन्ना ९२१)*

और यह ज्योति प्रत्येक मनुष्य में आत्मा के रूप में विद्यमान है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कहते हैं :

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥ . . .
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत हैं
पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे ॥
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ
ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥
(अकाल उसतत)

गुरबाणी के शबदों में सागर में बूंद की

*१५४, ट्रिब्यून कालोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३

तरह हम उसमें समाए हुए हैं और बूंद में सागर की तरह वह हम में समाया हुआ है। उस प्रभु और हमारे बीच कोई अंतर नहीं :

—ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ *(पन्ना २८७)*

—आतम रामु रामु है आतम. . . ॥ *(पन्ना १०३०)*

मनुष्य का अपने निर्माता के साथ तादात्म्य है, एकरूपता है, क्योंकि वह सभी के हृदयों में निवास करता है :

घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ *(पन्ना ५९७)*

गुरबाणी अपने अंदर विद्यमान इस ज्योति-स्वरूप मन को पहचान कर विकसित करने की प्रेरणा देती है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ *(पन्ना ४४१)*

तू प्रकाशपुंज है, दीप्तिमान है, नूर है, ज्योति-स्वरूप है। अपने आप को पहचान कर श्रेष्ठता को प्राप्त करो, क्योंकि सभी में उस प्रभु की ज्योति विद्यमान है :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ *(पन्ना १३)*

यह सत्य है कि परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना की है, परन्तु जो ज्ञान की चिंगारी उसने मनुष्य के अंदर स्थापित की है उसे प्रज्वलित कर वह आज सृष्टि पर राज्य कर रहा है। अंबर, पृथ्वी, सागर, अंतरिक्ष कोई भी उसकी पहुंच से बाहर नहीं। मनुष्य पर प्रभु की असीम कृपा है, क्योंकि उसके अंदर मानसिक-आध्यात्मिक शक्तियों का खजाना छिपा है। इस संसार के अनंत अविष्कार, खोजें, प्राप्तियां, सभ्यता, संस्कृति का विकास इस तथ्य का समर्थन करते हैं कि मानव मन कितना शक्तिशाली है।

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ *(पन्ना २)*

—अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥
मैलु गई मनु निरमलु होआ अंम्रित सरि तीरथि नाइ ॥ *(पन्ना ५८७)*

और इस ज्ञान-तीर्थ में स्नान कर आत्मा प्रकाशित और प्रज्वलित हो जाती है, उसकी अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है :

अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ *(पन्ना १२४)*

जब मनुष्य इन आंतरिक शक्तियों को गुरु की सहायता से विकसित कर लेता है तो वह नर से नारायण बन जाता है, पुरुष से पुरुषोत्तम बन जाता है, आत्मा और परमत्मा के बीच हउमै की दीवार टूट जाती है, आत्मा और परमात्मा एक बन जाते हैं :

राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥ *(पन्ना ९६९)*

जब मनुष्य अपने अंदर के ज्योति-स्वरूप मन को पहचान, अपनी शक्तियों को विकसित कर लेता है तो वह अपना दीपक स्वयं बन जाता है। उसकी अंतरात्मा में रिमझिम-रिमझिम अमृतधारा बरसने लगती है, जिसे पीकर मानव की अंतरात्मा तृप्त हो जाती है, शरीर कंचन बन जाता है, अंतर नाद की ध्वनि सुनाई देती है :

अंतरि कमलु प्रगासिआ अंम्रितु भरिआ अघाइ ॥ *(पन्ना २२)*

और जब यह आंतरिक ज्योति प्रकाशित हो जाती है, प्रफुल्लित हो जाती है तो मनुष्य प्रभु-रूप बन जाता है, ब्रह्मज्ञानी बन जाता है, अमूल्य बन जाता है। ऐसी अवस्था में मनुष्य की अंतरात्मा जागृत हो उसकी प्रेरणा बन जाती है। अन्तरात्मा ज्ञान का प्रकाश देने वाली दैवी शक्ति है, जिसके द्वारा जीवन में शुभ गुणों का विकास होता है। मनुष्य में अच्छाई और बुराई दोनों हैं। जब दैवी गुणों का पलड़ा भारी होता है, मनुष्य अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुन सद्‌मार्ग पर चलता है। वह अपनी आन्तरिक अच्छाई को पहचान अपना दीपक स्वयं बन जाता है। यह दैवी विकास उसके आध्यात्मिक

विकास का साधन बन आत्मा और परमात्मा के अन्तराल को मिटा देता है। भक्त कबीर जी के अनुसार मनुष्य प्रभुमय बन जाता है :

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ *(पन्ना १३७५)*

यह भिन्नता में अभिन्नता, अनेकता में एकता, *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* की भावना मानवतावाद को, मानवीय भाईचारे को जन्म देती है, जिसको समझकर मनुष्य किसी से घृणा नहीं करता।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि मनुष्य उस ज्योति-स्वरूप परमात्मा का अंश है, परन्तु वह अपने ज्योति-स्वरूप को क्यों भूल जाता है? वास्तव में यह माया का पर्दा अपने आप को पहचाने बिना हटता नहीं :

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ *(पन्ना ६८४)*

माया रूपी पर्दे को हटा, तुझे परमात्मा अपने अंदर ही मिल जाएंगे। उस प्रभु को खोजने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसै निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥
(पन्ना ६८४)

आत्मा अचल, अडोल, अमर और सनातन है, परन्तु पांच तत्त्वों से निर्मित यह देह क्षणभंगुर है। शरीर चोला बदलता है और कर्मों के अनुसार बार-बार जन्म लेता है। जिसने जन्म लिया है उसने मरना जरूर है। अत: मृत्यु पर शोक मत करो :

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥
(पन्ना १४२९)

वह हमें इस संसार में भेजता है और बुला लेता है :

घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥
(पन्ना १२३९)

मृत्यु देह की तबदीली का दूसरा नाम है। केवल देह मरणशील है, आत्मा अमर है :

मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥ *(पन्ना १८८)*

अत: गुरबाणी में इस देह-अवसान के अवसर पर रोने के स्थान पर आत्मा की शान्ति के लिए कीर्तन और अरदास के द्वारा प्रभु-इच्छा के सम्मुख नत्मस्तक होने की बात कही गई है :

मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ . . .
अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ *(पन्ना ९२३)*

यह एक अटल सच्चाई है कि शरीर मरणशील है, परन्तु यह भी एक सार्वभौमिक सत्य है कि इस शरीर में आकर ही आत्मा संपूर्णता को प्राप्त करती है :

पवनै महि पवनु समाइआ ॥
जोति महि जोति रलि जाइआ ॥ *(पन्ना ८८५)*

सेवा, परोपकार, नेकी, सच्चाई, तपस्या, नाम-सुमिरन आदि शुभ गुणों का जीवन में विकास कर मनुष्य ब्रह्मज्ञानी बनता है। आवश्यकता है अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानने की, मन और इंद्रियों की लगाम द्वारा अपने आप को नियन्त्रित करने की।

आत्मा शरीर रूपी रथ को चलाती है। शरीर रथ है। आत्मा यह रथ चलाने वाला सारथी और मन लगाम है। इंद्रियों रूपी बलवान घोड़ों को मन रूपी लगाम और आत्मा रूपी सारथी के द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है:

नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥
(पन्ना ४७०)

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

गुरुद्वारा सुधार लहर तथा चाबियों का मोर्चा

*-स. गुरमेल सिंघ 'नियामतपुरी'**

दस गुरु साहिबान ने मनुष्य को जिंदगी के हर क्षेत्र में विकास करने के लिए एक नई जीवन-पद्धति प्रदान की, जिसमें उन्होंने मानवता को समानता और स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी। श्री गुरु नानक देव जी चाहते थे कि जनता गुलामी और दूसरे बंधनों से आजाद हो। गुरु नानक पातशाह का पंथ शुरू से ही सच, प्रेम, आजादी और गैरत का रक्षक रहा है। श्री गुरु अरजन देव जी ने शांतमयी नीति अपनाई और अमानवीय कष्ट अपने तन पर सहे कि शायद जालिमों का अमानवीय स्वभाव अपने किए हुए अत्याचारों को देखकर फिर से मानवीय हो जाए। इसके लिए उन्होंने शांति और संयम को शिखर तक बनाए रखा। जब उन्होंने देखा कि जालिम शांति के तरीके से नहीं सुधरेंगे तो उन्होंने अपने बेटे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को शस्त्र धारण करने और जालिमों का डटकर मुकाबला करने का आदेश दिया। अत: हथियार उठाना अंतिम रास्ता है जबकि अन्य सभी तरीके असफल हो जाते हैं। इतिहास के पन्नों में ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं जिनमें सिखों ने शांतिपूर्वक विरोध के द्वारा इस बात का सबूत दिया है।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, बाबा बंदा सिंघ बहादुर, सिख मिसलों तथा महाराजा रणजीत सिंघ के समय तक जुल्म का सामना करने एवं अधिकार प्राप्त करने के लिए अनेक हथियारबंद लड़ाइयां लड़ी गईं। चाबियों का मोर्चा सिख पंथ के इतिहास में एक ऐसा अद्वितीय महत्वपूर्ण संघर्ष है जो शांतमयी ढंग से लड़ा गया और जिसके सामने ब्रिटिश सरकार को अंत में घुटने टेकने ही पड़े थे।

जंगों-युद्धों के दौरान गुरुद्वारों की सेवा-संभाल का काम महंतों के हाथ में आ गया था। आरंभ में तो वे ठीक ढंग से गुरुद्वारों की सेवा-संभाल करते रहे, परन्तु बाद में धीरे-धीरे उन्होंने गुरुद्वारों में मूर्तियां स्थापित कर दीं और सिख सिद्धांतों के उलट अन्य भी कई काम करने लगे। वे गुरु-घर की गोलकों को निजी स्वार्थों में प्रयोग करने लगे थे अर्थात् वे इनका दुरुपयोग करने लगे थे। परिणामस्वरूप वे बहुत ऐशप्रस्त और कुकर्मी बन गए थे। पंजाब में लगभग २६० गुरुद्वारे महंतों के हाथ में थे। इन महंतों ने अंग्रेजी सरकार की मदद से गुरुद्वारों और उनके नाम लगी सम्पत्ति को अपनी जायदाद बना लिया था। ये महंत बहुत नीच और कुकर्मी थे। इनमें प्रत्येक गंदी आदत थी। ये महंत पंथ के महान उसूलों का पालन न करते हुए गुरुद्वारों को गुण्डागर्दी के अड्डे बनाए बैठे थे। कुछ समकालीन इतिहासकार कहते हैं कि गुरुद्वारों की ऐसी दुर्दशा देखकर कई सिख लोग वहां जाना पसंद नहीं करते थे।

गुरुद्वारों की ऐसी हालत को देखकर सिख लोग काफी समय तक चुप नहीं बैठ सकते थे। अत: उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी चरण में 'सिंघ सभा लहर', १९०२ ई में एक मुख्य संस्था 'चीफ खालसा दीवान' और १९१९ ई में सिखों

**रीसर्च स्कालर, सिख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि: गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर। मो ९९१४७३४४३४*

की एक नई राजनैतिक संस्था "सेंट्रल सिख लीग" बनी। इन संस्थाओं ने क्रमश: सिख धर्म में आई हुई कमियों को दूर करने, गुरुद्वारों के प्रबंध में सुधार करने तथा उन पर केवल पंथ का ही नियंत्रण स्थापित करने के लिए प्रशंसनीय काम किया।

इस तरह से जब गुरुद्वारों के सुधार की मांग चल रही थी तब कुछ सिखों ने ढोंगी महंतों पर मुकद्दमे किये, पर इन मुकद्दमों का कोई भी फायदा न हुआ। इसलिए सुधारकों ने सोचा कि क्यों न नैतिक दबाव डालकर इन महंतों तथा सरकार से गुरुद्वारों को वापिस लिया जाए! तब इन सिख सुधारकों ने अहिंसावादी तरीके से श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख्त साहिब, बाबे की बेर तथा शेखूपुरा के सच्चा सौदा गुरुद्वारों पर कब्जा कर लिया। सरकार ने शुरू में सिखों के द्वारा गुरुद्वारे लेने का विरोध नहीं किया, क्योंकि सरकार यह नहीं चाहती थी कि सिख महात्मा गांधी द्वारा चलाए नए असहयोग आंदोलन में भाग लें। जब सिखों ने श्री हरिमंदर साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों को वापिस ले लिया था तो उन्होंने इन गुरुद्वारों का प्रबंध भी पंथ के उसूलों के अनुसार करने के लिए श्री अकाल तख्त साहिब पर १५ नवंबर १९२० ई को एक मीटिंग की, जिसमें सिखों ने एक केंद्रीय कमेटी बनाई, जिसका नाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी रखा गया। इसके १७५ सदस्य थे। सरकार द्वारा बनाई गई प्रोविजनल कमेटी के ३६ सदस्य भी इसमें शामिल कर लिये गए।

ब्रिटिश सरकार ने शुरू में शिरोमणि गु: प्र: कमेटी का विरोध नहीं किया, क्योंकि कमेटी के पहले प्रधान स. सुंदर सिंघ मजीठिया सरकार के विरोधी नहीं थे। १४ दिसंबर १९२० ई में सिखों ने दूसरी संस्था 'अकाली दल' का गठन किया, जिसका उद्देश्य गुरुद्वारों को नैतिक दबाव के द्वारा नियंत्रण में लाना था। अकाली दल में कई जत्थे थे। इन जत्थों के सदस्य ज्यादातर छोटे-छोटे किसान होते थे तथा बड़े किसान या जमींदार इनके जत्थेदार होते थे। ये किसान सरकार की आर्थिक नीतियों से भी बहुत ज्यादा दुखी थे। जब सिख नेताओं ने धार्मिक आन्दोलन चलाया तो वे सारे किसान मिलकर सरकार का विरोध करने के लिए इकट्ठे हो गए। इस तरह शिरोमणि कमेटी तथा अकाली दल की अगुआई में गुरुद्वारा सुधार लहर आन्दोलन शुरू हो गया।

अकाली सिखों ने जल्दी ही कुछ गुरुद्वारों पर कब्जा कर लिया। परन्तु जब तरनतारन साहिब के गुरुद्वारे के पुजारियों के साथ समझौते की शर्तों पर विचार हो रही थी तो पुजारियों ने सिखों पर छवियों और लाठियों से हमला कर दिया, जिसमें १७ सिख जख्मी हुए तथा २ सिख शहीद हो गए।

सिखों को इस बात क पक्का यकीन हो गया था कि जब तक महंतों के प्रति सख्त नीति नहीं प्रयोग की गई तब तक वे गुरुद्वारों को नहीं छोड़ेंगे। जब २० फरवरी, १९२१ को १५० सिखों का जत्था सुधार के उद्देश्य के लिए श्री ननकाणा साहिब पहुंचा तो महंत नारायण दास ने सिखों के जत्थे पर हमला करवा दिया। इस हमले में सिखों को बहुत बेरहमी से कत्ल किया गया। भाई लछमण सिंघ को वृक्ष के साथ बांधकर जिन्दा जला कर शहीद कर दिया गया। इसी तरह बहुत सारे अन्य जीवित घायलों पर तेल डाल कर आग लगा दी गई।

सरकारी दस्तावेजों से यह साफ पता चलता है कि महंत नारायण दास के साथ मिल कर अंग्रेज अधिकारियों ने अकालियों पर हमला करवाया। अकाली जानते थे कि महंत यह सब कुछ अकेला नहीं कर सकता था। ननकाणा

साहिब की इस घटना ने सिखों में न केवल रोष ही पैदा किया बल्कि उन्होंने गुरुद्वारा एक्ट बनाने तथा सारे गुरुद्वारे पंथ के हाथ में देने की भी मांग की।

इस समय के दौरान देश में महात्मा गांधी के द्वारा चलाया हुआ असहयोग आंदोलन चल रहा था तथा वे चाहते थे कि पंजाब में सिख भी इस आंदलोन में बढ़-चढ़ कर भाग लें। आरंभ में सिख असहयोग आंदोलन में भाग नहीं लेना चाहते थे। इसके दो कारण थे, एक तो शिरोमणि कमेटी को यह उम्मीद थी कि सरकार कोई न कोई बिल पास करके पंथ को देगी तथा दूसरा, शिरोमणि कमेटी के नेता गुरुद्वारा सुधार लहर को महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन का भाग नहीं बनाना चाहते थे। सरकार ऐसा बिल बना रही थी जिसमें सरकार का दखल भी बना रहता और पंथ का गुरुद्वारों पर भी पूरा अधिकार न होता। परन्तु अकाली दल और शिरोमणि कमेटी के नेता ऐसा कोई भी बिल मानने को तैयार नहीं थे, जिससे कि गुरुद्वारे पंथ के हाथ में न आते हों। सरकार ने ऐसी हालत में यह बिल वापिस ले लिया।

२० मई, १९२१ को शिरोमणि कमेटी ने प्रस्ताव पास किया कि वह गुरुद्वारा सुधार के लिए असहयोग की नीति को अपनाएगी। स. हरबंस सिंघ अटारी ने शिरोमणि कमेटी के पद से त्याग-पत्र दे दिया। बाबा खड़क सिंघ को शिरोमणि कमेटी का नया अध्यक्ष बनाया गया। अब अकालियों की गुरुद्वारा सुधार लहर तथा महात्मा गांधी का असहयोग आंदोलन साथ-साथ चल रहे थे और एक दूसरे की मदद कर रहे थे। इन हालात में सरकार और शिरोमणि कमेटी का टकराव होना स्वाभाविक था। यह टकराव श्री हरिमंदर साहिब के तोशेखाने की चाबियों के प्रश्न को लेकर हो गया। सरकार ने स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया को श्री हरिमंदर साहिब का सरबराह नियुक्त किया हुआ था। सरबराह की हैसियत से वह डिप्टी कमिश्नर अमृतसर का आदेश मानता था। शिरोमणि कमेटी बनने के पश्चात् वह कमेटी का आदेश भी मानने लगा। प्रो. रुचि राम साहनी लिखते हैं कि उसने अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर करैक को पत्र लिखा कि सरकार ने उसे सरबराह नियुक्त किया था और पंथ ने उसे कमेटी का सचिव नियुक्त किया है। उसने डी. सी. से राय मांगी कि उसे क्या करना चाहिए, अगर नई कमेटी उससे तोशेखाने की चाबियां मांगती है तो मिस्टर करैक ने उसे लिखा कि वह कमेटी की हिदायतों के अनुसार कार्य करे।

पंजाब सरकार ने २० अप्रैल १९२१ को यह ऐलान किया कि उसने श्री हरिमंदर साहिब का सारा प्रबंध पंथ के हवाले कर दिया है। इस तरह से तोशेखाने की चाबियां कमेटी के पास ही रहीं और सरबराह, कमेटी की हिदायतों के अनुसार ही काम करता रहा।

सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अध्यक्षता से त्याग-पत्र दे दिया और वे पंजाब सरकार की एगजैक्टिव कौंसिल के सदस्य नियुक्त हो गए। उनके स्थान पर स. खड़क सिंघ को अध्यक्ष बनाया गया। उस समय स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया शिरोमणि कमेटी के उपाध्यक्ष थे और श्री हरिमंदर साहिब के प्रभारी थे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने २९ अक्तूबर, १९२१ को यह प्रस्ताव पास किया कि तोशेखाने की चाबियां शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष स. खड़क सिंघ के पास रहें। स. सोहन सिंघ जोश लिखते हैं, "स. खड़क सिंघ अकाली तहरीक के वायुमंडल में पैदा हुई नई बागी स्प्रिट का मन रूप थे। उनकी बोलचाल,

तकरीरों के जोश, मूंछों के ताव और चेहरे के जलाल से उस बागी स्प्रिट का प्रदर्शन होता था।" ब्रिटिश सरकार नहीं चाहती थी कि श्री हरिमंदर साहिब का कब्जा उसके हिमायती के पास से विरोधी के पास चला जाए और गुरुद्वारों में सबसे बड़ा और सम्मानयोग्य स्थान श्री हरिमंदर साहिब अपनी सारी संचित पूंजी के साथ गर्म-ख्याली सिखों के कब्जे में जाए। इसलिए डिप्टी कमिश्नर ने स्थानीय सरकार के आदेश के अनुसार श्री हरिमंदर साहिब के मैनेजर स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया को हिदायत की कि दरबार साहिब के तोशेखाने और पवित्र यादगारों की कुछ चाबियां सुरक्षित संभाल के लिए उनके हवाले कर दें।

७ नवंबर १९२१ को शाम के ३ बजे लाला अमरनाथ ऐक्सट्रा असिस्टेंट कमिश्नर पुलिस को साथ लेकर श्री हरिमंदर साहिब में आए और स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया से श्री हरिमंदर साहिब के तोशेखाने की चाबियां मांगीं और पूछा कि चाबियां कहां हैं? इस पर स. सुंदर सिंघ ने इशारा करके बता दिया कि चाबियां उस दराज में हैं। उन्होंने उसमें से दो थैलियां चाबियों की निकालीं और जाने लगे तो स. सुंदर सिंघ ने रसीद मांगी जिस पर ई. ए. सी. अमरनाथ ने रसीद लिखकर दी, "डिप्टी कमिश्नर के हुक्मों की ताबेदारी करते हुए मैंने आज स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया के पास से ५३ चाबियां वसूल पाई हैं, जो कि तोशाखाना श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की हैं। ये चाबियां मैंने डिप्टी कमिश्नर के हवाले करने के लिए ली हैं।"

सरकार की चाबियां लेने की कार्यवाही से सिखों में प्रचण्ड जोश पैदा हो गया। सरकार ने अपने इस कदम को सही बताया और कहा कि शिरोमणि कमेटी सिखों की प्रतिनिधि जमात नहीं है। सरकार का कहना था कि वह ये चाबियां उस संस्था को देगी जो सही रूप में सिखों की प्रतिनिधि संस्था होगी। सरकार का मानना था कि उसका अभी भी श्री दरबार साहिब पर नियंत्रण है, परन्तु सच तो यह है कि सरकार का उस समय श्री दरबार साहिब पर कोई अधिकार ही नहीं था, क्योंकि जब शिरोमणि कमेटी ने श्री दरबार साहिब का प्रबंध करने के लिए १२ सदस्यों की एक सभा बनाई थी तो सरकार ने कोई हस्तक्षेप नहीं किया था, परन्तु सरकार अब सोचने लगी थी कि शिरोमणि कमेटी अब राष्ट्रवादी लोगों के हाथ में है और वह श्री दरबार साहिब को राष्ट्रवादी गतिविधियों के काम में लाएगी। सरकार ने यह नहीं सोचा कि वह चाबियों को अपने हाथ में लेकर सिखों में सरकार-विरोधी भावना को बढ़ा रही थी।

सरकार की चाबियां लेने की कार्यवाही पर सिख समाचार पत्रों का प्रतिक्रम बहुत तीखा और जोशीला था। 'रोजाना अकाली' ने लोगों को सरकार की नीतियों से अवगत कराया और सिखों को सम्बोधन करके लिखा, "आओ खालसा जी! शांतमयी झंडा हाथ में पकड़कर नौकरशाही की पोल खोलकर जनता के सामने रख दो और विरोध के द्वारा दुनिया को बता दो कि हमारे धर्म में खुलम-खुल्ला दखल दिया गया है। जगह-जगह पर जलसे करके शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा समाचार पत्रों को नाराजगी के रैज़ुलेशन भेजो।" 'पंथ सेवक' ने लिखा, "एक विदेशी हकूमत को गुरुद्वारों के मामले में दखल देने का क्या हक है? हम देखेंगे कि हमारे धार्मिक खजाने पर सरकार कैसे कब्जा करती है!"

पंजाब के सारे लोगों और सिखों ने भी बढ़-चढ़ कर असहयोग आन्दोलन को अपनाना शुरू कर दिया। इसलिए १० नवंबर १९२१ को

शिरोमणि कमेटी ने श्री अकाल तख्त साहिब पर प्रस्ताव पास किया कि कौंसिल के सदस्यों ने शिरोमणि कमेटी के गुरमते के अनुसार अगर एक सप्ताह तक अपनी सदस्यता नहीं छोड़ी तो वे तनखाहिए* घोषित कर दिए जाएंगे।

१४ नवंबर १९२१ को सरकार ने कप्तान बहादर सिंघ को श्री दरबार साहिब का सरबराह नियुक्त किया। १५ नवंबर को जब बहादर सिंघ प्रबंध संभालने के लिए आया तो सिखों ने उसको प्रबंध संभालने नहीं दिया। श्री अकाल तख्त साहिब पर गुरमता पास हुआ कि जब तक कप्तान बहादर सिंघ सरकारी सरबराही से त्याग-पत्र देकर शिरोमणि कमेटी के द्वारा पंथ से माफी नहीं मांगता तब तक वह पंथ की ओर से तनखाहिया रहेगा। इसलिए २६ नवंबर १९२१ को बहादर सिंघ ने कमेटी को विनती की कि उसने सरबराही से त्याग-पत्र दे दिया है और सरकार को चाबियां वापिस लेने के लिए कहा है और वह पंथ से माफी मांगता है। इसके बाद सरकार किसी और सिख को चाबियां देना चाहती थी पर कोई भी सिख चाबियां लेने के लिए तैयार न हुआ।

डिप्टी कमिश्नर जगह-जगह पर सिखों से सम्बन्धित गलत फहमियां फैलाने लगा। उसने २६ नवंबर को अजनाला में एक दरबार रखा। सिखों ने इसके मुकाबले में २६ नवंबर १९२१ के ११ बजे एक आलीशान दीवान लगाने के लिए इश्तिहार लगवा दिए। परन्तु इस दीवान से पहले ही २४ नवंबर को पंजाब सरकार ने लाहौर, अमृतसर, शेखूपुरा आदि जिलों में "सैडीशन मीटिंग एक्ट" लागू करने का ऐलान कर दिया। २६ नवंबर को सरकार द्वारा किए गए जलसे में स. दान सिंघ वछोया तथा स. जसवंत सिंघ झब्बाल ने भाषण देने की अनुमति मांगी। पर डी. सी. के द्वारा अनुमति न दिए जाने पर उन्होंने "रालियों के कुएं" के पास श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करके दीवान शुरू कर दिया। डी. सी. ने स. दान सिंघ वछोया तथा स. जसवंत सिंघ झब्बाल को पूछा कि क्या यहां पर श्री दरबार साहिब की चाबियों के बारे में भाषण होंगे। उन्होंने उत्तर दिया, "हां"। डी. सी. ने स. दान सिंघ वछोया, स. जसवंत सिंघ झब्बाल, स. तेजा सिंघ समुंद्री, स. हरनाम सिंघ जैलदार और पंडित दीनानाथ ऐडीटर को जलसा रोको कानून के अधीन गिरफ्तार कर लिया।

जब इन गिरफ्तारियों की खबर शिरोमणि कमेटी को मिली तो श्री अकाल तख्त साहिब पर हो रही कमेटी की एकत्रता को स्थगित करके स. खड़क सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, स. महताब सिंघ सचिव शिरोमणि गु: प्र: कमेटी कुछ साथियों के साथ अजनाला पहुंचे। उन्होंने वहां पहुंच कर दीवान लगाया, जिसमें स. खड़क सिंघ, सरदार बहादर स. महताब सिंघ आदि मुखियों ने भाषण दिए। पुलिस ने स. खड़क सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि कमेटी, स. महताब सिंघ सचिव, मास्टर सुंदर सिंघ लायलपुरी, प्रबंधक रोजाना अकाली, स. भाग सिंघ, स. गुरचरण सिंघ तथा स. हरी सिंघ जालंधरी को गिरफ्तार किया। गिरफ्तारियों के बाद सरकार ने इन गिरफ्तारियों की पुष्टि के लिए बयान जारी किया, "क्योंकि जिला अमृतसर में 'जलसे रोकू कानून' लागू हो चुका है और इन्होंने इस हुक्म के उल्ट जलसा करके कानून को भंग किया है।" यह जलसा शिरोमणि कमेटी का दीवान था, परन्तु सरकार ने इसे कांग्रेस का जलसा प्रकट किया, ताकि इसे राजनीतिक जलसा बताकर इस पर आसानी से "जलसा रोको कानून" लागू किया जा सके।

मुखियों की गिरफ्तारी के बाद २७ नवंबर

तनखाहिया वह सिख होता है जो खालसा पंथ के नियमों के विरुद्ध कार्य करने पर धर्म-दण्ड का अधिकारी घोषित हो।

को कमेटी की सभा हुई जिसमें स. अमर सिंघ झब्बाल को अध्यक्ष तथा कप्तान राम सिंघ को उपाध्यक्ष और स. तारा सिंघ को सचिव चुन लिया गया। इस सभा में कमेटी ने चाबियां लेने, धार्मिक दीवान लगाने तथा गिरफ्तार होने वाले सिखों को बधाई देने से सम्बंधित कुछ प्रस्ताव पास किए।

नवंबर के महीने में ही वेल्ज के शहजादे की भारत में यात्रा थी। वह १७ नवंबर को मुम्बई में पहुंचा था। इस समय पर असहयोग आंदोलन भी जोरों पर था। गांधी जी ने उस अवसर पर एक रोष सभा आयोजित की जिसमें विदेशी कपड़े जलाए गए। शिरोमणि कमेटी ने वेल्ज के शहजादे के बायकाट का प्रस्ताव पास किया हुआ था कि सिख उससे सम्बन्धित समारोहों में भाग न लें और पंजाब में उसे न आने दिया जाए। शिरोमणि कमेटी के द्वारा पारित किये बायकाट के प्रस्ताव ने पंजाब सरकार के अधिकारियों को इतना डरा दिया था कि पंजाब में उनके दौरे को रद्द करना पड़ा था।

चाबियों का मोर्चा तेज हो चुका था। रोजाना एक दीवान श्री अकाल तख्त साहिब और दूसरा दीवान गुरू के बाग में लगता था। चाबियों को वापिस लेने और अकाली नेताओं की गिरफ्तारियों से सम्बन्धित बड़े जोश भरे और निधड़क भाषण होते। गांवों से जत्थों के नेता निकल पड़े। उन्होंने अंग्रेजी सरकार की धर्म-स्थानों पर कब्जा जमाए रखने की कुटिल चालों से सिख संगतों को अवगत करवाया।

बुगियाना जिला लाहौर में से भाई हरबंस सिंघ और कुछ सिख गुरुद्वारा सच्चा सौदा में स. करतार सिंघ झब्बर के पास अमृत छकने के लिए पहुंचे। स. करतार सिंघ झब्बर ने भाई लाभ सिंघ भिक्खी को बुगियाने में भेजकर अमृत संचार की तैयारी करवाई और वहां पर अमृत-संचार हुआ। अगले दिन दीवान लगा और आसा की वार का कीर्तन हुआ। दीवान को गोरा फौज ने घेर लिया। स. करतार सिंघ झब्बर ने संगतों को चुपचाप कीर्तन सुनने के लिए कहा।

स. झब्बर के भाषण खत्म होने पर डी. सी. फैरर साहिर ने उन्हें बाहर बुलाया। वहां पर तहसीलदार, पुलिस इंस्पेक्टर, क्षेत्रीय तथा अन्य अफसर भी खड़े थे। डी. सी. ने बड़े गुस्से के साथ स. झब्बर से कहा, "देखो सरदार साहिब, यहां जलसे में अंग्रेजों को बंदर और सूअर कहा गया है। हमारी गौरमिंट के खिलाफ बड़ा भारी ऐजीटेशन किया गया है।"

स. झब्बाल ने डी. सी. को उत्तर दिया, "यह सारी बात गलत है, किसी ने सरकार के विरुद्ध कुछ नहीं कहा और न ही अंग्रेजों को बंदर और सूअर कहा है। हमने तो केवल श्री हरिमंदर साहिब की चाबियां सरकार से वापिस लेने के लिए भाषण दिए हैं और अभी तो प्रस्ताव भी पारित करना है।"

डी. सी. ने अफ्सरों से इसके बारे में पूछा। इंस्पेक्टर ने कहा कि किसी ने भी इस दीवान में ऐसा नहीं कहा, वो तो नगर-कीर्तन के समय एक व्यक्ति ने भाषण देते हुए कहा था। स. झब्बर ने कहा कि उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लो। यह बात सुनकर डी. सी. नरम पड़ गया और स. झब्बर के कहने पर उसने फौज का पहरा हटा दिया। पहरे हटने के बाद स. झब्बर ने एक घंटा फिर चाबियों से सम्बंधित भाषण दिया। डी. सी. ने भाषण सुना और ३५ व्यक्तियों की गिरफ्तारी के आदेश दिए। स. झब्बर को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

२९ नवंबर १९२१ को पहले गिरफ्तार हुए अकाली आगुओं का मुकद्दमा मिस्टर कानर की

अदालत में पेश हुआ। स. दान सिंघ, स. जसवंत सिंघ, स. हरनाम सिंघ, स. तेजा सिंघ तथा पण्डित दीनानाथ को कानर के सामने पेश किया गया। उन्होंने कहा कि उनकी गिरफ्तारी अन्यायपूर्ण तथा गैर-कानूनी है, क्योंकि एक्ट के अनुसार धार्मिक जलसों पर रोक नहीं लगाई गई थी। अगर डी. सी. दरबार या जलसा कर सकता है तो लोग भी कर सकते हैं। पर मैजिस्ट्रेट ने इस दलील को सही नहीं माना। गिरफ्तार किए हुए सिखों ने सरकार से असहयोग किया और अपने पक्ष में कोई भी गवाह पेश नहीं किया। दिसंबर १९२१ में कानर ने इनको सजा देते हुए फैसला सुनाया, जिसमें स. हरनाम सिंघ जैलदार को एक हजार रुपये जुर्माना तथा ४ महीने की कैद हुई और बाकी साथियों को हजार-हजार रुपये जुर्माना तथा पांच-पांच महीने की सख्त कैद की सजा सुनाई गई।

इसके पश्चात दिसंबर १९२१ में कानर ने दूसरे जत्थे के गिरफ्तार किए गए नेता स. खड़क सिंघ, सरदार बहादर स. महताब सिंघ, स. भाग सिंघ वकील, स. हरी सिंघ जालंधरी, स. गुरचरण सिंघ वकील और मास्टर सुंदर सिंघ लायलपुरी को जुर्माना छः-छः मास की सजा दी गई। जुर्माना न देने की सूरत में छः-छः मास की सजा और भी सुनाई गई थी। इस फैसले के बाद मुखियों को जेल में भेज दिया गया।

स. सोहन सिंघ जोश लिखते हैं, "ध्यान देने योग्य और अद्‌भुत बात यह थी कि चोटी के लीडर अपने आप को गिरफ्तारियों के लिए पेश कर रहे थे और अकाली नौजवान उनकी जगह पूरी कर रहे थे और संभाल रहे थे। लीडरों की गिरफ्तारियों ने आम लोगों को मैदान में उतरने के लिए बड़ा उत्साह दिया।"

कुल १९३ सिखों की गिरफ्तारियां हो चुकी थीं। लोगों में सरकार विरोधी जजबा जोरों पर था। सरकार के वफादार छुपे हुए थे। लोग हर जगह आन्दोलनकारियों को पनाह देते थे।

आन्दोलन को शान्ति से कुचलने की सरकारी नीति असफल हो चुकी थी। लाला लाजपत राय ने सिखों के बारे में लिखा, "लोग ख्याल करते थे कि सिख स्वतंत्रता के संघर्ष में पीछे रह गए थे और वे सैनिक वर्ग होने के कारण अहिंसा के सिद्धांत को ग्रहण करने में सबसे पीछे होंगे। उन्होंने इन गलत धारणाओं को झूठा सिद्ध कर दिया। आरंभिक पड़ाव में चाहे वे पीछे होंगे परन्तु इस महत्वपूर्ण पल पर वे दूसरों को काफी पीछे छोड़ गए। जहां तक अहिंसा और निजी बलिदान का सम्बंध है, उन्होंने बहुत आश्चर्यजनक प्रमाण १५ नवंबर को ननकाणा साहिब में और बाद में अजनाला तथा अमृतसर में अपने वतीरे से दिए हैं। निजी बलिदान, शांति, दलेरी, ढींगों के बिना तथा उत्तेजना के बावजूद पूर्ण स्वै काबू की जो मिसाल उन्होंने कायम की है, मुश्किल से ही मात की जा सकेगी।"

शिरोमणि कमेटी ने ६ दिसंबर को यह प्रस्ताव पारित किया कि चाबियां वापिस लेने के लिए उस समय तक कोई भी प्रबंध न माना जाए जब तक कि चाबियों के सम्बंध में गिरफ्तार किए गए सारे सिखों को बिना शर्त रिहा नहीं किया जाता। सरकार इतने अत्याचार के बाद भी लहर को कुचलने में असफल रही थी। उनको कोई भी सिख चाबियां लेने के लिए नहीं मिल रहा था। सरकार बहुत मुश्किल में फंसी हुई थी। डी. सी. ने जिला जज को कमेटी के पास भेजा, परन्तु शिरोमणि कमेटी ने आरजी तौर पर चाबियां लेने से इन्कार कर दिया। कमेटी ने यह शर्त लगाई कि पहले सारे कैदी छोड़े जाएं फिर कमेटी के अध्यक्ष स. खड़क सिंघ चाबियां लेंगे।

डी. सी. ने रियासती सदस्यों की कमेटी बनाकर चाबियां वापिस देने की एक योजना बनाई, पर इसमें वह असफल रहा। उसने सिखों में फूट डालने की बहुत कोशिश की परन्तु सफल न हुआ। ७ दिसंबर १९२१ को उसने उदासियों द्वारा श्री अकाल तख्त साहिब पर हमला करवाया। उदासियों ने चिमटों और त्रिशूलों से अकालियों को जख्मी किया। अगर बाहर से लोग सहायता के लिए न पहुंचते तो बहुत भारी जानी नुकसान हो सकता था।

इसके बाद सरकार ने अपने वफादार स. परदुमन सिंघ बेदी को सुलतान से बुलाया, ताकि वह बेदियों को शिरोमणि कमेटी के विरुद्ध भड़का कर चाबियां प्राप्त कर ले, परन्तु स. परदुमन सिंघ असफल होकर चला गया।

गांवों और कसबों में से सिख गिरफ्तारियों के लिए धड़ाधड़ आ रहे थे। मोर्चा जोर पकड़ रहा था। गांवों में बहुत से सिख लोग काली पगड़ियां बांधकर तथा कृपाण पहनकर अकाली बनते जा रहे थे। स्त्रियां भी काले दुपट्टे लेकर और कृपाण पहन कर जत्थों में शामिल हो रहीं थीं।

महात्मा गांधी के अनुसार पंजाब सरकार उस समय दुविधा में थी। वे लिखते हैं, "अगर सरकार अकालियों को रिहा करती थी तो उसकी खिल्ली उड़ाई जाएगी और सिखों की ताकत में दुगनी वृद्धि होगी। अगर वह उनको नहीं छोड़ती है तो उनकी ताकत में दस गुना वृद्धि होगी।"

आखिर सरकार को झुकना ही पड़ा। ११ जनवरी १९२२ को ऐलान किया गया कि सरकार ने श्री दरबार साहिब से अपना सम्बंध वापिस लेने का फैसला कर लिया है और वह श्री हरिमंदर साहिब का प्रबंध शिरोमणि कमेटी के हाथों में दे रही है। उसने कुछ सिख कैदी छोड़ने का आदेश भी दे दिया।

सरकार ने सिख नेताओं को छोड़ दिया। हिन्दू, मुसलमान और सिखों ने अमृतसर शहर को खूब सजाया और सिख नेताओं का बेमिसाल स्वागत किया गया। १९ जनवरी १९२२ को श्री अकाल तख्त साहिब के सामने बड़ा भारी दीवान लगा। इस दीवान में डिसट्रिक मैजिस्ट्रेट ने आकर स. खड़क सिंघ, अध्यक्ष शिरोमणि गु: प्र: कमेटी को तोशेखाने की चाबियां पेश कीं। संगत से आज्ञा लेकर स. खड़क सिंघ ने चाबियां प्राप्त कीं। यह एक बहुत बड़ी जीत थी।

इस तरह चाबियों का मोर्चा सिख इतिहास की अद्वितीय घटना है, जिसमें सिखों ने शांतिपूर्वक अपना अधिकार प्राप्त किया। वे इस लड़ाई में बिना हथियारों के लड़े और अपने इस विद्रोह के द्वारा अपना हक प्राप्त करने में सफल हुए।



हम धन्यवाद करते हैं *स. फकीर सिंघ जी, निवासी सुभाष चौंक, स्टेशन रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़) का, जिन्होंने कठिन परिश्रम करके गुरु-इतिहास तथा गुरबाणी के प्रचार-प्रसार हेतु ३१ सज्जनों को प्रेरित कर उन्हें 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाया। अकाल पुरख वाहिगुरु स. फकीर सिंघ जी को सदा स्वस्थ व चढ़दी कला में रखें ताकि वे यूं ही धार्मिक कार्यों में रुचि लेकर गुरु-घर की खुशियां प्राप्त करते रहें।*

-संपादक।

कविता

सवेरा

-श्री सुरजीत 'दुखी'*

कलम जब उठी तो अन्धेरा था।
मेरे दिल को ख्यालों ने घेरा था।
रात गुजरे जा रही थी फिर भी,
लगता मुझे दूर सवेरा था।
जब बादल जुल्म के छा जाते हैं।
जब इमां से सब घबरा जाते हैं।
उस अंधेरे में रास्ता दिखाने को,
गुरु पातशाह जहां में चले आते हैं।
इनके आसार होते अज़ब हैं।
कर कर्म कर देते गज़ब हैं।
बारिश हकीकत की आकर हैं करते,
कर दिखावा वे लेते जज़्ब हैं।
तुम्हें इतिहास में हूं ले जाता।
कथा गुरु नानक जी की हूं सुनाता।
सौदा सच्चा सुना होगा सबने,
करिश्मा बचपन का हूं मैं बताता।
आज के ठेकेदारों को देखो,
सौदा मतलब से करते शुरू हैं।
गुमराह कर लोगों को रंग दिखाते,
फिर कहलाने लगते 'गुरु' हैं।
राम, रहीम और खुदा क्या हैं सारे ?
हैं ये सारे ही अपने सहारे।
न फर्क, न तर्क हजूर इनमें,
हैं ये एक ही सारे के सारे।
उस फरिश्ते ने एक ही सीखा,
एक ही उसने सबको सिखाया।
रुहानियत की इबारत को ऐसे,
सारी दुनिया में उसने फैलाया।
रम रहा है हर जगत ही,
साबित उसने यह कर भी दिखाया।
मक्का दिखा उधर ही उसको,
जिधर था मुल्लां ने मुंह को घुमाया।
गंगा में कुछ लोग जो खड़े थे।
पूर्वजों के वो पीछे पड़े थे।
उन्हें रास्ता दिखाने की खातिर,
गुरु नानक जी उल्ट दिशा में खड़े थे।
हेराफेरी, इमां और हकीकत में,
उसने फर्क जो भी है वह बताया।
लालो, भागो की कमाई से उसने
दूध और लहू निकाल दिखाया।
था बाबर ने जुल्म कमाया।
निर्दोषों को जेल में बंद करवाया।
गुरु नानक जी को जेल में बंद करने के बहाने किये थे।
फिर पीसने को कुछ दाने दिए थे।
गुरु जी को अब उनकी बाणी से जानो!
उनके इशारों को अब तो पहचानो!
न भटको भाइयो गुरु-मार्ग से अब,
गुरमति को जानो, गुरमति को मानो।
दुखों को बढ़ाते हो खुद ही,
चैन अपना गंवाते हो खुद ही।
मतलबप्रस्ती और लालच में आकर,
भाई अपना लूट ले जाते हो खुद ही।
मतलब, लालच और मैं को भुला दो।
रिश्ता हकीकत से अब तो बना लो।
गुरु नानक जी ने जो रास्ता दिखाया,
चलो इस पे अपनी मंजिल को पा लो।
बयां मैं ख्यालों को करने लगा था।
तब अन्धेरा था जब मैं जगा था।
गुरु से, गुरबाणी से आए सवेरा,
'दुखी' आशा तब से यह करने लगा था।



*३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौर गेट, श्री अमृतसर।

नित्य बढ़ती इच्छाओं को वश में कैसे करें ?

-डॉ मनजीत कौर*

भौतिक चकाचौंध के इस युग में सभी दुखी हैं। किसी का दुख चाहे चेहरे से न झलके, लेकिन जिसकी भी नब्ज टटोलो अपनी अथाह पीड़ा का राग आलाप देगा, जैसा कि गुरबाणी का पावन फरमान है :

नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ (पन्ना ९५४)

संसार में दुखों के अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन मुख्य कारण है, इच्छाओं का विस्तार। मनुष्य के मन में इच्छाओं की लहरें हर पल उमड़ती रहती हैं और कभी-कभी तो इनका सैलाब ही आ जाता है। चिंतकों के चिन्तनानुसार हमारे मन में एक इच्छा जन्म लेती है तो साथ ही शुरू हो जाती है उसे पूरा करने की कोशिश। पहली इच्छा अभी पूरी नहीं हुई होती कि चार और इच्छाएं हमारे अन्तःकरण में पल्वित हो उठती हैं। उन्हें पूरा करने की कवायदें चल ही रही होती हैं कि दस और इच्छाएं हमारे मन में डेरा जमा लेती हैं। इस तरह यह सिलसिला चलता ही रहता है और मनुष्य इसे पूरा करने की हर मुमकिन-नामुमकिन कोशिशें करता हुआ इसी उधेड़बुन में अपना अमूल्य और दुर्लभ जीवन नष्ट कर लेता है तथा सदैव वास्तविक सुख से वंचित ही रहता है। इस सन्दर्भ में श्री गुरु अरजन देव जी का पावन शबद है :

वडे वडे राजन अरु भूमन ता की त्रिसन न बूझी ॥
लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥ (पन्ना ६७२)

गुरबाणी आशयानुसार इन इच्छाओं का कोई पारावार नहीं है और न ही इच्छाओं से इच्छाएं कभी तृप्त हो सकती हैं, जैसे घी से अग्नि, जल से मछली तथा हवा से आकाश कभी तृप्त नहीं होता, वैसे ही अनेकों इच्छाओं के पूर्ण हो जाने पर भी मानव-मन तृप्त नहीं होता।

वस्तुतः इच्छाओं पर गुरमति ज्ञान की ओट द्वारा काबू पाकर वास्तविक एवं स्थायी सुख को अपनी झोली में समेटा जा सकता है। आओ! इस सन्दर्भ में कुछ मुख्य बिन्दुओं पर विचार करें :-

१. अपनी इच्छाओं को वशीभूत करने हेतु सर्वप्रथम तो हमें धरती से जुड़ना होगा क्योंकि "जितनी भी चिड़ियां उड़ें आकाश, दाना है धरती के पास।" अतः हमें महलों की अपेक्षा झोंपड़ियों में रहने वालों या उनसे भी वंचित लोगों की ओर देखना होगा, तभी हमें अहसास होगा कि हमें ईश्वर ने किन-किन सुखों से निवाज़ा है तथा हमारा जीवन कोटिश-कोटिश लोगों से बेहतर है। इस सन्दर्भ में एक सत्य-कथा पाठकों के साथ सांझी करना चाहूंगी।

एक बार किसी धर्म-स्थान में एक गरीब इंसान खड़ा था। वह हर रोज धर्म-स्थान आता था। वह बहुत समय से एक जोड़ा जूते खरीदने की कोशिश में लगा था, लेकिन बहुत समय से उसकी यह ख्वाहिश पूरी नहीं हो पाई थी। उस दिन उसने धर्म-स्थान में आते एक रईस को देखा जो बहुत बड़ी गाड़ी से उतरा था।

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-४ फोन: ०१४१-२६५०३७०

तिलेदार जूती, शानदार सूट, शाही ठाठ से जब वह आया तो उस गरीब आदमी से रहा न गया और उसने उस अमीर आदमी से पूछ ही लिया—"साहिब! आप यहां हर रोज कितनी बार आते हो?" पहले तो उसने सोचा कि इसने इस बात से क्या लेना है, परंतु फिर थोड़ा रुककर कहता है, "आता हूं वर्ष में एक या दो बार।" वह गरीब यह सुनकर और अधिक दुखी हो गया। उस ने मन ही मन कहा, "वाह भगवान यही है तेरा न्याय? साल में एक-दो बार आने वाला इतना अमीर और मैं हर रोज आकर तेरे दर्शन करता हूं उसके लिए एक जोड़ा जूते भी नहीं। आज से नहीं आऊंगा यहां।"

यही बुदबुदाते हुए सीढ़ियों से नीचे उतर ही रहा था कि सामने बड़ी मुश्किल से सीढ़ियां चढ़ते एक व्यक्ति को देखा जिसकी घुटनों तक टांगें ही नहीं थी, जो लगभग घसीटते हुए अपने शरीर को मंजिल तक लाने का प्रयास कर रहा था। उस गरीब व्यक्ति ने उसे देखते ही ईश्वर से सच्चे दिल से क्षमा-याचना करते हुए उसका धन्यवाद किया, "हे ईश्वर! शुक्र है, तूने मुझे दोनों पैर तो दिए हैं।"

कहने का अभिप्राय, जब तक हम अपने से पिछड़ों को आगे चलचे वालों को नहीं देखेंगे तब तक समझ ही नहीं पाएंगे कि ईश्वर ने हमें क्या कुछ नहीं दिया! अतः आओ! सदैव आध्यात्मिक पक्ष से अपने से जो आगे हैं उनकी ओर देखें ताकि आध्यात्मिक प्रगति हो सके तथा आर्थिक रूप से जो अपने से पीछे हैं उनकी ओर देखें ताकि हमारे जीवन में संतोष रूपी गुण आएं और हम ईश्वर का धन्यवाद कर सकें।

२. हमें जो नहीं मिला उसका मातम न मनाते हुए जो मिला है उसका सदुपयोग करते हुए परोपकारी जीवन व्यतीत करना है। श्री गुरु नानक देव जी का पावन उपदेश *"नाम जपो, किरत करो, वंड छको"* को जीवन में उतारना है जिससे हृदय में हर पल एक सकून बना रहेगा तथा आनंद और उत्साह हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन जाएंगे।

३. मन में दृढ़ निश्चय करें। पदार्थक इच्छाओं की कोई सीमा या अंत नहीं है। अतः आओ! मन में हिलोरे लेती पदार्थक इच्छाओं को गुरु-ज्ञान के प्रकाश में वश में करना सीखें तथा साथ ही मानवता या सरबत्त का भला जैसी शुभ-इच्छाओं को बलवती होने दें और उन्हें पूरा करने के लिए ईश्वर के आगे अरदास करें।

४. समस्त चिंतकों, भक्तों, रहबरों ने संतोष को अति व्यापक मूल्य के रूप में स्वीकृत किया है जिसमें यथा लाभ तथा संतुष्ट रहने की सीख दी गई है, जैसा कि गुरबाणी का पावन फरमान है :

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ *(पन्ना १४२९)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी में सत्य, संतोष तथा चिंतन का संकलन है। संतोष अर्थात् जीवन जीने की कला। कहने का अभिप्राय, वह परवरदिगार जिस हाल में रखे उसी में राजी रहना, संतुष्ट रहते हुए उस ईश्वर का शुक्राना करना। यही नहीं इसी संतोष से ही अपरिग्रह की वृत्ति बनती है जो समूची मानवता की उन्नति व कल्याण हेतु आवश्यक सीढ़ी है और इसी में सरबत्त के भले की भावना समाहित है।

५. चाहे व्यर्थ इच्छाओं से बचना सरल नहीं है फिर भी सत्य साहित्य पढ़ने से महान पुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेने से जिन्होंने न्यूनताओं एवं अल्पताओं के होते हुए भी समाज में क्रान्ति ला

दी और उनका जीवन जन-जन के लिए मिसाल बन गया, क्योंकि संतोष रूपी धन के समक्ष कुबेर का खजाना भी तुच्छ प्रतीत होता है।

श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी का सिद्धांत—*"मनि जीतै जगु जीतु"* को अपना कर ही वास्तविक सुख तथा सदैव कायम रहने वाला आनंद प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि मन की शांति ही असली पूंजी है। मानव मन की इच्छाओं का दायरा जितना सीमित होगा वास्तविक सुख का दायरा उतना ही विशाल होता जायेगा। हमें भौतिकता की अंधी दौड़ से आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होना है। ईश्वर के चरणों में हर पल अरदास करनी है कि हे रहमतों के सागर! रहम कर, हम अपने बेशकीमती जीवन को व्यर्थ की इच्छाओं में बर्बाद न करें!



कविता

उषा के प्रति

*–डॉ. दादूराम शर्मा 'कोविद'**

खोलती हो चेतना के द्वार।
असित कुंतल पृष्ठ लहरा, चिर कुमारी ज्योति वसना।
तारुण्यमय नव अरुण मुख, स्मित प्रभा शुचि किरण दशना।
प्रस्फुटित नव कुसुम-चय का, उल्लसित शृंगार।
सुरभिपूरित मृदु पवन है, श्वास का संचार।
कर रहे द्विज स्वस्ति-गायन,
कमल-कारा-मुक्त मधुकर मनोहर गुंजार।
खोलती हो चेतना के द्वार।
आलस्य-मद-हृतचेत जग में कर्मण्यता का स्वाप।
पिला अमृत जागरण का दूर कर अभिशाप।
कर रहीं जीवन्तता का तुम अमर उद्घोष।
प्रेरणा दे कर्म की हर विफलता का रोष।
आशा जगी भागी निराशा,
हो चराचर सजग करता, कल्पना साकार।
खोलती हो चेतना के द्वार।
वासक सज्जा खड़ी हो तुम खोल प्राची-द्वार।
प्रवासी-प्रिय-अर्चना के नव्यतम उपहार।
हो सजाए स्वर्णमय नीराजना का थार।
अनुरक्त-कर-संयत किए तव-तिमिर-कुन्तल भार।
अस्पृष्ट छवि आत्मस्थ करता,
आ गया प्रिय सुन तुम्हारी प्रणयमय मनुहार।
खोलती हो चेतना के द्वार।
खेत पर गाते चले ले हल कृषक भर मोद।
ग्राम के उल्लास से भरती प्रकृति की गोद।
अशिक्ष-अभाव से है ग्राम-जीवन ग्रस्त।
अहं-ईर्ष्या-रोग-चिन्ता-रहित फिर भी मस्त।
मनुजता-तरलित हृदय-निष्यन्द से उद्भूत।
है यहीं पर निराडम्बर धर्म का व्यवहार।
खोलती हो चेतना के द्वार।
कामना-मरु मरीचिका का हरिण नागर जीव।
खो रहा जीवन-सुधा हो रहा अविरत क्लीब।
भयंकर भूकम्प-पातित आस्था का सौध।
परस्पर संघर्ष करता शान्ति का प्रतिरोध।
अनाकर्षक प्रकृति है अदृष्ट तेरी मधुर छवि,
सरसता-विरहित बना जीवन यहां निस्सार।
खोल दो नव चेतना के द्वार।



**प्राध्यापक, महाराज बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र.)-४८०६६१*

गुरबाणी चिंतनधारा-२८

जापु साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

अजै हैं ॥ अबै हैं ॥ अभूत हैं ॥ अधूत हैं ॥१३५॥

हे वाहिगुरु! तुझे जीता नहीं जा सकता। तू नाश रहित स्वरूप वाला है। तेरी रचना पांच तत्वों से रहित है। तुझे कोई हिला नहीं सकता।

अर्थात् हे परमेश्वर! तू अजय है अर्थात् तुझे हराने की किसी में सामर्थ्य नहीं है। तू अविनाशी है। सृष्टि का प्रत्येक जीव पांच भौतिक स्वरूप में निर्मित है। केवल वह ईश्वर पांच तत्वों से नहीं बना। सारा जगत, समस्त रचना परिवर्तनशील है। केवल एक अकाल पुरख एकरस मौजूद है।

अनास हैं ॥ उदास हैं ॥ अधंध है ॥ अबंध है ॥१३६॥

हे वाहिगुरु! तू नाश रहित स्वरूप वाला है। तू सांसारिक मोह से रहित है, माया के त्रिगुणी प्रभाव से भी परे है। तू सांसारिक झगड़ों-झमेलों से मुक्त है। तू सभी तरह के बंधनों से स्वतंत्र है।

अर्थात् वह परमेश्वर अविनाशी है। मोह-माया के समस्त बंधनों से मुक्त तथा स्वतन्त्र हस्ती वाला है।

अभगत हैं ॥ बिरकत हैं ॥
अनास हैं ॥ प्रकास हैं ॥१३७॥

हे वाहिगुरु! तू मोह से रहित है। सांसारिक पदार्थों से निर्लेप है, नाश रहित स्वरूप वाला है, प्रकाश-पुंज है।

अर्थात् वह परमेश्वर सारी रचना का मालिक होते हुए भी किसी से मोह-बंधन में नहीं है, जैसे संसारी जीव जिस पदार्थ को या जिस किसी को अपना मान लेता है उसके मोह-बंधन में बंध कर रह जाता है। यह सारी रचना उसी की है, फिर भी वह मोह-बंधनों से पूर्णतया मुक्त है। आओ! यहां मोह और प्रेम में प्रमुख अंतर समझने का प्रयास करें। मोह का दायरा महापुरुषों के चिन्तानुसार सीमित है तथा स्वार्थ के धरातल पर खड़ा है, क्योंकि मोह का सम्बंध कुछ देर के लिए उससे कुछ लेने की भावना रखता है लेकिन प्रेम निःस्वार्थ है। प्रेम केवल देना ही जानता है। प्रेम समर्पण है। प्रेम का दायरा अत्यंत विशाल है। गुरु कलगीधर पातशाह ने तो प्रेम और प्रभु को एक दूसरे का पूरक माना है। गुरदेव का फरमान है :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥ (त्व प्रसादि सवय्ये, पा: १०)

कलगीधर पातशाह ने डंके की चोट पर सारी दुनिया को संदेश दिया है कि जिन्होंने प्रेम किया है उन्होंने ही प्रभु को पाया है। वस्तुतः प्राणी मात्र से प्यार करने वाले ही ईश्वर से प्यार कर सकते हैं। उपरोक्त पंक्ति गुरु पातशाह के मानवतावादी दृष्टिकोण की भी परिचायक है। वह प्रभु ज्ञान का प्रकाश है।

निचिंत हैं ॥ सुनिंत हैं ॥
अलिक्ख हैं ॥ अदिक्ख हैं ॥१३८॥

हे वाहिगुरु! तू हर तरह की चिंता से रहित है। तू सदा कायम रहने वाला है। तेरी तस्वीर नहीं बनाई जा सकती और तू इन आंखों से दिखाई नहीं देता। प्रो. साहिब सिंघ जी ने गुरु कलगीधर पातशाह द्वारा रचित इस बंद

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ मो: ०१४१-२६५०३७०*

की व्याख्या बहुत सुंदर ढंग से की है कि वह परमेश्वर जगत रूप परिवार वाला है तथा सब जीवों के सिर पर कायम है। न ही कोई तेरी तस्वीर खींच सकता है और न ही तू इन आंखों से देखा जा सकता है।

अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥
अढाह हैं ॥ अगाह हैं ॥१३९॥

हे वाहिगुरु! तेरा कोई चित्र नहीं बन सकता। तेरा कोई पहरावा नहीं है। तुझे कोई गिरा नहीं सकता। तू बहुत गहरा है।

प्रस्तुत बंद में गुरदेव उस परमेश्वर के गुणों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि वह प्रभु अलेख है। कुछ विद्वानों के चिन्तनानुसार 'अलेख' शब्द का अर्थ है बिना लेखे-जोखे के इस आशयानुसार वह ईश्वर किसी भी तरह के हिसाब-किताब के झंझटों से मुक्त है। उसका स्वरूप किसी विशेष रूप-रेखा से परे है। वह सर्वोपरि है। उसे कोई पराजित नहीं कर सकता। वह सर्वशक्तिमान है। इसका कोई अंत नहीं पाया जा सकता।

असंभ हैं ॥ अगंभ हैं ॥
अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥१४०॥

हे परमेश्वर! तू जन्म में नहीं आता, तू सर्वव्यापी है। तूं रूप-रंग से रहित है। तू मूल-रहित स्वरूप वाला है। असंभ शब्द का अर्थ डॉ अजीत सिंघ के अनुसार, जो विचार में न आ सके। अर्थात् हे ईश्वर! तू संसारी जीवों की सोच-विचार से परे है। इन्सानी सोच बुद्धि एक सीमा में है। अत: तुझे कैसे जाना जा सकता है? प्रत्येक वस्तु प्राणी का कोई रूप-रंग है पर तू रूप-रंग से रहित है। तेरी प्रारम्भता का किसी को कोई अंदाजा नहीं। तू अनादि स्वरूप है।

अनित्त हैं ॥ सुनित्त हैं ॥
अजात हैं ॥ अजाद हैं ॥१४१॥

हे वाहिगुरु! तू प्रतिदिन दिखाई देने वाली वस्तुओं से अलग है। तू सदैव कायम रहने वाला है। तू आवागमन से रहित है। तू जीवों का मूल है और पूर्णतया स्वतंत्र हस्ती वाला है। अर्थात् वह प्रभु किसी के भी अधीन नहीं है।

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
सरबं हंता ॥ सरबं गंता ॥
सरबं खिआता ॥ सरबं गिआता ॥१४२॥

उसी परमेश्वर की कृपा से रचित चरपट छंद में रचित इस बंद में गुरदेव का फरमान है कि हे वाहिगुरु! तू ही समस्त प्राणियों का संहार करने वाला है। सभी स्थानों तक तेरी पहुंच है, सब जीवों में तू विख्यात है। अर्थात् सर्वत्र तेरी ही चर्चा है। तू सबके दिलों की जानने वाला है। जैसा कि गुरु पातशाह ने अन्यत्र भी उस वाहिगुरु को अंतर्यामी कहा है, यथा :

घट घट के अंतर की जानत ॥
भले बुरे की पीर पछानत ॥ (चौपई पा: १०)
सरबं हरता ॥ सरबं करता ॥
सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥१४३॥

हे वाहिगुरु! तू सबको नष्ट करने वाला है। तू सर्वस्व का सृजनहार है। तू सब जीवों का प्राणधन है। तू सबका आश्रय है, अत: समस्त में तेरी ही जीवन-सत्ता है। तू सबका बल और आसरा है।

सरबं करमं ॥ सरबं धरमं ॥
सरबं जुगता ॥ सरबं मुकता ॥१४४॥

हे परमेश्वर! तू समस्त कार्यों का कारण अर्थात् प्रेरक है। तू सब में व्यापक होकर समस्त कर्त्तव्य स्वयं ही निभा रहा है। तू सब में बसा है पर सबसे निर्लेप है।

प्रस्तुत बंद में गुरु पातशाह ने यह तथ्य समझाया है कि वह परमेश्वर निराकार होते हुए साकार स्वरूप में मौजूद है। दुनिया के समस्त कार्य उस प्रभु के ही अधीन हैं। समस्त जिम्मेवारियों का निर्वाह भी उसी के द्वारा ही हो

रहा है। वह प्रभु सब में व्यापक होते हुए भी सबसे निर्लेप है।

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥
नमो नरक नासे ॥ सदैवं प्रकासे ॥
अनंगं सरूपे ॥ अभंगं बिभूते ॥१४५॥

रसावल छंद में उस परमेश्वर की कृपा से उच्चारण किया गया।

हे प्रभु! तू नरकों को नाश करने वाला है। तू सदा प्रकाश-स्वरूप है। अंगों से रहित प्रभु! तेरा प्रकाश कभी नष्ट होने वाला नहीं है।

इस बंद में उस ईश्वर के समस्त रूपों को नमन करते हुए गुरदेव फरमान करते हैं कि हे नरकों के कष्टों का नाश करने वाले प्रभु! तू प्रकाश-पुंज है। हे शरीर (अंगों से रहित) प्रभु! तेरा तेज स्वरूप सदा कायम रहने वाला है।

प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा सरब साथे ॥
अगाध सरूपे ॥ न्रिबाध बिभूते ॥१४६॥

इस बंद में गुरदेव उस परमेश्वर के विलक्षण गुणों का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर दूसरों को दुखी करने वालों को नष्ट करने वाला है। हे परमात्मा! तू सदैव सबके अंग-संग है। तू सर्वव्यापी है। तेरी महिमा अपरम्पार है। अत: तेरी हस्ती का कोई अंत नहीं पा सकता और न ही तेरे तेज प्रताप को कोई रोक सकता है।

अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकामे ॥
न्रिभंगी सरूपे ॥ सरबंगी अनूपे ॥१४७॥

हे वाहिगुरु! तेरा कोई अंग नहीं है। तेरा कोई विशेष नाम भी नहीं है। तीनों लोकों को बनाने व नाश करने वाला तू ही है। तू तीनों लोकों के जीवों की कामना पूर्ण करने वाला है। तेरा स्वरूप नाश रहित है। तेरा स्वरूप मुकम्मल है। तेरे जैसा एक तू ही है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव को दृढ़ करवाया गया है कि मैं चारों दिशाओं में घूम चुका हूं मगर हे मालिक! तेरे जैसा और तेरे जितना और कोई भी नहीं है।

न पोत्रे न पुत्रै ॥ न सत्रै न मित्रै ॥
न तातै न मातै ॥ न जातै न पातै ॥१४८॥

हे ईश्वर! न तेरा कोई पुत्र है न पौत्र है। न तो तेरा कोई मित्र है, न शत्रु, न तेरा कोई पिता है न माता। न तो तेरा कोई वंश है और न ही धर्म।

प्रस्तुत बंद में गुरदेव ने उस ईश्वर को पूर्णतया मोह-माया के बंधन से मुक्त बताया है इसलिए वह परमेश्वर पूर्णतया मेरे-तेरे के बंधनों से मुक्त है।



कविता

मेहनत

फिक्र मत करो, तुम नाम जपो
रतन है जिदंगी तुम्हारी।
तुम कुछ बनो
पल-पल से बने हैं घंटे
और घंटों से दिन।
दिन करोगे बर्बाद तो
कभी न हो सकेगी पूर्ति।

न सोचो कि आज है रविवार
या कोई और है दिन-त्योहार
करके जोश का संचार
करो कार-व्यवहार
मेहनत को बनाओ मित्र-यार
उम्मीदों से शक्ति बनाओ हर बार
तभी रहोगे सफल 'चंचल सिंघ' करना ऐतबार।

-स. चंचल सिंघ, २८, ग्रेट नाग रोड, नागपुर।



गुरु-गाथा-७

घालि खाइ किछु हथहु देइ

*-डॉ. अमृत कौर**

गुरु साहिबान इस बात पर बहुत बल देते थे कि मनुष्य अपनी आजीविका ईमानदारी और परिश्रम से कमाए, खून-पसीने की कमाई करे, किसी का अधिकार न छीने, अपनी नेक कमाई में से जरूरतमंदों की सहायता करे। श्री गुरु हरिराय साहिब जी का एक शिष्य था। उसका नाम था पुंगर। वह कीरतपुर के समीप एक गांव में रहता था। खेती करके अपनी गुजर-बसर करता था। गुरु जी की परिश्रम की नेक कमाई का सिद्धांत उसने जीवन में ढाल लिया था।

पुंगर चाहे गरीब था पर अपनी थोड़ी कमाई में से भी आए-गए अतिथियों और परमात्मा की भक्ति-साधना में संलग्न लोगों की सेवा करता था।

एक बार एक सन्यासी उसके गांव में आया। गांव के लोगों ने स्वभाववश उसे पुंगर के पास भेज दिया। पुंगर ने प्यार और सत्कार से उसकी सेवा की। सन्यासी को उसकी इस गरीबी पर तरस आ गया। उसके पास एक रासायन की डिबिया थी जिसके साथ छू कर लोहे को सोना बनाया जा सकता था। सन्यासी ने पुंगर को उस सायन की प्रशंसा सुनाई और कहने लगा, "इस डिबिया को रख लो। इसके उपयोग से तुम्हारा जीवन भी सुखमय बन जाएगा और आने-जाने वाले अतिथियों की सेवा भी अच्छी तरह से कर सकोगे। परन्तु पुंगर ने वह रासायन की डिबिया लेने से इंकार कर दिया। उसने उत्तर दिया कि "मुफ्त का माल बुराइयों को जन्म देता है। सफल तो वही धन होता है जो ईमानदारी और परिश्रम से कमाया जाता है। परिश्रम की कमाई ही फलती-फूलती है।" परन्तु फिर भी वह साधू न माना और रासायन की डिबिया पुंगर को दे दी।

एक वर्ष के बाद वह साधू पुन: गांव आया और पुंगर के घर गया। उसने देखा कि पुंगर तो वैसा ही गरीबी का संतुष्ट जीवन जी रहा है। उसने पुंगर से पूछा कि "भाई सिखा! लगता है तुमने रासायन की डिबिया का प्रयोग नहीं किया। कहां है मेरा दिया वह पारस?" पुंगर ने आले में रखी पोटली की ओर संकेत करते उत्तर दिया, "वहां पड़ा है तुम्हारा पारस, इस को वापिस ले लो। हमें परिश्रम की नेक कमाई खाने का आदेश है जिस रोटी में से अमृत-तुल्य स्वाद आता है। भाई! नेक कमाई का अपना ही आनन्द है। गुरु जी ने कहा है:

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥" (पन्ना १२४५)



नानक नाम जहाज है

आकुलता है, पंख है, परवाज़ है। जिंदगी के सरगम का साज है।
पार करना हो भव-सागर अगर, साथ में नानक-नाम जहाज है।

-डॉ. रघुनंदन चिले, २३२, मागंज वार्ड नं. १, दमोह (म. प्र.)-४७०६६१

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-१७

आदर्श सिख एवं उच्च कोटि के विद्वान- कवि कीरत सिंघ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में से एक हैं कवि कीरत सिंघ। प्रो. प्यारा सिंघ पदम ने अपनी पुस्तक 'गुरु गोबिंद सिंघ जी दे दरबारी रतन' में इन्हें गुरु-दरबार का पहला ऐसा विद्वान लेखक माना है जिसने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पर्याय लिखे।

कवि कीरत सिंघ द्वारा रची गई कई रचनाएं उपलब्ध हैं, जो हस्तलिखित पांडुलिपियों के रूप में भिन्न-भिन्न पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। सन् १९६१ ई में भाषा विभाग, पंजाब ने राज्य के कई पुस्तकालयों में पड़ी हस्तलिखित कृतियों की सूची प्रकाशित की थी। इन हस्तलिखित रचनाओं में से कइयों को कवि कीरत सिंघ की रचनाएं माना गया है।

दशमेश पिता के अनेक दरबारी कवियों ने जहां महाभारत के विभिन्न पर्वों का अनुवाद किया वहीं कवि कीरत सिंघ ने रामायण के कई प्रसंगों का अनुवाद भी किया। इसमें संबंधित इनकी तीन रचनाएं पटियाला की मोतीबाग लायब्रेरी में सुरक्षित हैं। इन रचनाओं के नाम हैं—'अनूप रामायण', 'सतसोया रामायण' और 'कीरत रामायण'।

इसके अलावा कवि कीरत सिंघ की कुछ और रचनायें हैं जिनमें सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के जीवन और कार्यों का वर्णन किया गया है। इनमें से 'कथा स्री बिक्रमाजीत की' कृति की हस्तलिखित प्रति पंजाबी साहित्य अकादमी, लुधियाना की लायब्रेरी में सुरक्षित है। इसी तरह की एक और रचना 'सिंहासन बत्तीसी' भी है, जो हस्तलिखित पांडुलिपि के रूप में सेन्ट्रल पब्लिक लायब्रेरी, पटियाला में रखी हुई है।

कवि कीरत सिंघ की समस्त रचना लगभग एक हजार पृष्ठों की सामग्री है। यह सारा साहित्य अनुवाद किया गया साहित्य है, जो कवि कीरत सिंघ की प्रकाण्ड विद्वता को प्रकट करता है।

कवि कीरत सिंघ मात्र विद्वान एवं कवि ही नहीं थे वरन् दशमेश पिता के समर्पित सिख भी थे। आप दशमेश पातशाह के मिशन के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। दशम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई मनी सिंघ जी के नेतृत्व में पांच सिखों को गुरमति के प्रचार-प्रसार के लिए श्री अमृतसर भेजा था। इन पांच सिखों में से एक कवि भाई कीरत सिंघ भी थे।

इस प्रकार दशमेश पिता के दरबारी कवियों में से कवि कीरत सिंघ एक ऐसे व्यक्तित्व थे जो न सिर्फ उच्च कोटि के विद्वान एवं कवि थे बल्कि गुरु साहिब के श्रेष्ठ एवं समर्पित सिख भी थे।

हरि मंदरु एहु सरीरु है

(पृष्ठ २९ का शेष)

और जब इस शरीर रूपी रथ की लगाम संतोष, धर्म, जत, सत, तप और साहस के हाथों होती है, तो यह सही मार्ग पर चलता रहता है, परन्तु जब झूठ के हाथों में इसकी लगाम आ जाती है तो कलियुग का प्रचलन होता है, अज्ञानता का अंधेरा छा जाता है, राजे कसाई बन जाते हैं, धर्म पंख लगा कर उड़ जाता है और झूठ की अमावस्या (काली रात) छा जाती है। अत: अपने जीवन के अंतिम उद्देश्य प्रभु-अनुभूति की प्राप्ति के लिए जीवन में शुभ गुणों का विकास आवश्यक है। हम प्रभु-नाम जपकर शुभ कर्म, नेकी, परोपकार, सेवा करके अपना जन्म संवार सकते हैं।





शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का स्थापना दिवस मनाया गया

अमृतसर : १४ नवंबर। सिख जगत की सर्वोच्च धार्मिक संस्था के रूप में जानी जाती शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की प्राप्ति के लिए सिख पंथ को महान कुर्बानियां देनी पड़ीं। इस संस्था की स्थापना से गुरुद्वारा प्रबंध में बहुत सुधार आया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरुद्वारा प्रबंध के साथ-साथ सिखी के प्रचार-प्रसार तथा विद्या के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई है। इन विचारों का प्रकटावा श्री अकाल तख्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने श्री अकाल तख्त साहिब में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का स्थापना दिवस मनाने के लिए एकत्र संगत को संबोधित करते हुए किया। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के महासचिव स. सुखदेव सिंघ भौर ने शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संगत द्वारा श्रद्धावश भेंट किए गए धन को अय्याशी तथा निजी हितों के लिए इस्तेमाल किए जाने से रोकने तथा परिवारवाद में उलझे गुरुद्वारा प्रबंध को संगत के हाथों में लाने के लिए बड़ी संख्या में स. करतार सिंघ झब्बर, स. लछमण सिंघ धारोवाली, स. हजारा सिंघ अलादीनपुर जैसे सिदकी सिखों के महान संघर्ष एवं कुर्बानियों के पश्चात यह संस्था अस्तित्व में आई है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि कमेटी विश्व की एक ही ऐसी धार्मिक संस्था है जिसके सदस्य सार्वजनिक रूप से लोकतांत्रिक ढंग से चुने जाते हैं। उन्होंने कहा कि शिरोमणि कमेटी ने १९६९ से लेकर अब तक बड़ी संख्या में गुरु साहिबान की शताब्दियां मनाकर गुरु साहिबान के उपदेशों को विश्व भर में उजागर किया है। इस अवसर पर श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी जसविंदर सिंघ के अलावा शिरोमणि कमेटी के अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

जत्थेदार अवतार सिंघ लगातार चौथी बार शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष बने

अमृतसर : २२ नवंबर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य कार्यालय तेजा सिंघ समुंद्री हाल, श्री अमृतसर में आज आयोजित वार्षिक चुनाव अधिवेशन के दौरान उपस्थित सदस्यों के द्वारा सर्वसम्मति से लगातार चौथी बार जत्थेदार अवतार सिंघ को अध्यक्ष चुन लिया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन हजूरी में तथा पांच सिंघ साहिबान की उपस्थिति में अरदास के पश्चात हुई चुनाव प्रक्रिया में जत्थेदार अवतार सिंघ को अध्यक्ष पद के लिए, स. रघुजीत सिंघ को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. केवल सिंघ बादल को कनिष्ठ उपाध्यक्ष तथा स. सुखदेव सिंघ भौर को महासचिव पद के लिए चुन लिया गया। ११ सदस्यीय कार्यकारिणी में स. टेक सिंघ

धनौला, स. राजिंदर सिंघ महिता, स. दयाल सिंघ कोलियांवाली, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, बीबी भजन कौर डोगरांवाला, स. निरमैल सिंघ जौलां कलां, स. करनैल सिंघ पंजोली, स. मोहन सिंघ बंगी, स. सुखविंदर सिंघ झबाल, स. बलदेव सिंघ खालसा तथा स. सूबा सिंघ डब्बवाला सदस्य चुने गए।

श्री गुरु रामदास लंगर में परशादे पकाने वाली एक और मशीन स्थापित

अमृतसर : २ दिसंबर। लंगर की संस्था का सिख जगत में विशेष स्थान है। जब से मैंने शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष के रूप में सेवा संभाली है, लंगर के प्रबंध को और सुचारू बनाने के लिए उदा यत्नशील रहा हूं। इस सम्बंध में मुझे प्रबंधकों तथा संगतों का भरपूर सहयोग भी मिला है। इन विचारों का प्रकटावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने इंग्लैंड में रहते गुरु-घर के श्रद्धालु श्री किशोर नानवानी द्वारा श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर के श्री गुरु रामदास लंगर के लिए परशादे तैयार करने वाली भेंट की गई नई मशीन का उद्घाटन करते समय किया। उन्होंने कहा कि सिख धर्म में संगत तथा पंगत की मर्यादा एक साथ चलती है। दर्शनार्थ आई संगत के लिए लंगर २४ घंटे खुले रहते हैं। उन्होंने बताया कि यह ९ लाख की कीमत वाली मशीन इंग्लैंड निवासी गुरु-घर के श्रद्धालु श्री किशोर नानवानी ने अपने दोस्त स. मनजीत सिंघ तथा उनकी सुपत्नी बीबी परमजीत कौर की प्रेरणा सदका अपनी माता श्रीमती राधा तथा पिता श्री किशन चंद की याद में श्री गुरु रामदास लंगर में भेंट की है। इस अवसर पर श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने कहा कि सतिगुरु महाराज ने श्री किशोर नानवानी पर अपार बख्शिश करके यह सेवा ली है। उन्होंने श्री किशोर नानवनी के परिवार की चढ़ती कला की कामना की। ज्ञात रहे कि इससे पहले श्री नानवनी लंगर हाल में लिफ्ट के अलावा और भी कई प्रकार की सेवाएं करवा कर गुरु-घर की खुशियां प्राप्त कर चुके हैं।

यह मशीन जी. एम. सी. इंजीनियरिंग वर्क्स लुधियाना की बनी हुई है तथा बिजली एवं गैस से चलती है। यह औसतन एक घंटे में चार से पांच किलो गैस से एक कुंतल आटे से पांच इंच परिधि वाले पांच हजार परशादे तैयार करने की सामर्थ्य रखती है। उद्घाटन समारोह के अवसर पर अरदास ज्ञानी धर्म सिंघ ने की तथा स. मनजीत सिंघ एवं बीबी परमजीत कौर को सिरोपा देकर सम्मानित किया गया।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०१-२००९